Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 44 • 04 अगस्त - 10 अगस्त, 2025 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 02-08-2025 • पेज 20 • ₹ 10 रुपये

कुगुरु

विण अंकुस जिम हाथी चाले, घोड़ो विगर लगाम।
एहवी चाल कुगुरु री जांणों, कहिवा नें साधु नांम।।

अंकुश के बिना हाथी चल रहा है और लगाम के बिना घोड़ा चल रहा है। कुगुरु की चाल भी ऐसी ही है, वह साधु का नाम धराता है किन्तु संयम के बिना चल रहा है।

– आचार्यश्री भिक्षु

आलस्यवश कल पर नहीं टालें अच्छा काम : आचार्यश्री महाश्रमण
पेज 02

कषाय को छोड़ने वाला बन सकता है अभय : आचार्यश्री महाश्रमण
पेज 18

Address Here

मानव जीवन में संयम-निर्जरा की आराधना करने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

'बेटी तेरापंथ की' के तृतीय वार्षिक अधिवेशन का हुआ आयोजन

कोबा, गांधीनगर।
26 जुलाई, 2025

शांतिदूत परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा — जो आश्रव हैं, वे ही परिश्रव हैं; जो परिश्रव हैं, वे ही आश्रव हैं। नव तत्त्वों में एक तत्त्व है — आश्रव। कर्म बंधन का हेतु आश्रव होता है। जन्म-मरण के क्रम का हेतु भी आश्रव होता है। आश्रव पाँच हैं — मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय और योग। पाँच प्रकार के आश्रवों में प्रथम चार नितांत अशुभ होते हैं, अर्थात् उनसे निर्जरा नहीं होती है। योग आश्रव शुभ भी होता है और अशुभ भी।

'आयारो' में जो कहा गया है कि जो आश्रव हैं, वे ही परिश्रव हैं — इसे हम योग आश्रव के संदर्भ में समझ सकते हैं। योग आश्रव से पापकर्म का बंध भी हो सकता है और निर्जरा भी। 'योग' आश्रव भी है और 'योग' निर्जरा भी है। शुभ योग भी आश्रव है, लेकिन वह पुण्य के रूप में होता है। आदमी की एक ही प्रवृत्ति बंध का हेतु भी बन सकती है और वही प्रवृत्ति निर्जरा का हेतु भी बन जाती है। जिस प्रवृत्ति के साथ मोहकर्म जुड़ जाता है, वह बंध कराने वाली होती है, और जिस प्रवृत्ति के साथ मोहकर्म नहीं जुड़ता, वह कर्म निर्जरा का हेतु बन जाती है।

आदमी को अपनी निर्जरा पर ध्यान देने का प्रयास करना चाहिए और पापकर्मों के बंधन से बचने का प्रयास करना चाहिए। आठ कर्मों में चार — ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय — एकांत पाप के कर्म हैं। इन कर्मों से आत्मा के गुणों की हानि होती है। शेष चार — वेदनीय, नाम, गोत्र और आयुष्य कर्म — ये पुण्यात्मक और पापात्मक दोनों प्रकार के होते हैं। ये कर्म आत्मगुणों की हानि करने वाले नहीं होते। मोक्ष जाने के लिए आठों कर्मों का क्षय अनिवार्य है।

मानव जीवन में आदमी जितना धर्म कर लेता है, वह उसके लिए उतना ही कल्याणकारी हो सकता है। मानव जीवन में जितना धर्माचरण हो सके, उतना करना चाहिए ताकि नए कर्मों का बंधन न हो। सामायिक, पौषध, जप, तप आदि द्वारा संयम-निर्जरा की आराधना करने का प्रयास करना चाहिए।

अहमदाबाद चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष अरविंद संचेती ने 'बेटी तेरापंथ की' सम्मेलन के संदर्भ में अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। अहमदाबाद की बेटियों ने भावनात्मक गीत के माध्यम से अपनी श्रद्धा प्रकट की।

(शेष पेज 17 पर)

साधना, संयम और तप से प्राप्त हो सकती है उत्तम गति : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
28 जुलाई , 2025

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन देशना प्रदान करते हुए कहा— 'दुनिया में अनेक दर्शन और विचारधाराएँ हैं। इन दर्शनों और विचारधाराओं को मानने वाले अनुयायी भी हो सकते हैं। जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, नैयायिक, वैशेषिक, सांख्य, चार्वाक आदि अनेक दर्शन हैं, जिनके अपने-अपने ग्रंथ हैं।

लोगों का संपर्क जब किसी भी दर्शन के व्याख्याकारों से हो जाता है और यदि उन्हें सावद्य कार्यों का निर्देश भी मिल जाए — अथवा जैसे चार्वाक दर्शन में यह मान्यता है कि आगे-पीछे कुछ नहीं है, केवल मौज करो — तो भिन्न-भिन्न संपर्कों और स्वयं के संस्कारों के कारण व्यक्ति पापकर्मों में भी संलग्न हो सकता है।

यदि किसी व्यक्ति की आस्था नास्तिकवाद के दर्शन में हो जाए, तो वह धर्म को महत्व ही नहीं देगा और हिंसा, असत्य, विषय-भोग, भोगासक्ति आदि में लिप्त होकर अधोगति को प्राप्त कर सकता है। ऐसे व्यक्ति, जो हिंसा आदि में रचे-पचे होते हैं, नरकादि दुर्गति को प्राप्त कर सकते हैं।

हम मनुष्य हैं। मनुष्य मरने के पश्चात नरक, तिर्यंच, मनुष्य या देवगति में जन्म ले सकता है। कोई मनुष्य पाँचवीं गति—मोक्ष—को भी प्राप्त कर सकता है। यह सिद्धांत है कि मोक्षगति केवल मनुष्य भव से ही प्राप्त हो सकती है।

जो व्यक्ति महारंभ, महापरिग्रह, पंचेन्द्रिय वध या मांसाहार जैसे भोगों में आसक्त रहते हैं, और यदि इन दुष्परिणामों में उनका आयुष्य बंध हो जाए, तो वे नरकगति को प्राप्त कर सकते हैं। जो मनुष्य असत्य बोलते हैं, छल-कपट, माया और गूढ़माया करते हैं, कूट माप-तौल करते हैं—तो ऐसे परिणामों में यदि आयुष्य का बंध हो जाए, तो वे तिर्यंचगति को प्राप्त कर सकते हैं।

जो व्यक्ति भद्र, दयालु और सदाचारयुक्त हैं, वे मरकर पुनः मनुष्य योनि में जन्म ले सकते हैं। जो व्यक्ति त्यागी, तपस्वी और साधु हैं, यदि उनकी साधु अवस्था में आयुष्य का बंध होता है, तो वे देवगति—और उसमें भी वैमानिक देवगति—को प्राप्त करते हैं।

(शेष पेज 17 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 अगस्त - 10अगस्त, 2025

मन में न हो हिंसा के भाव : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
24 जुलाई, 2025

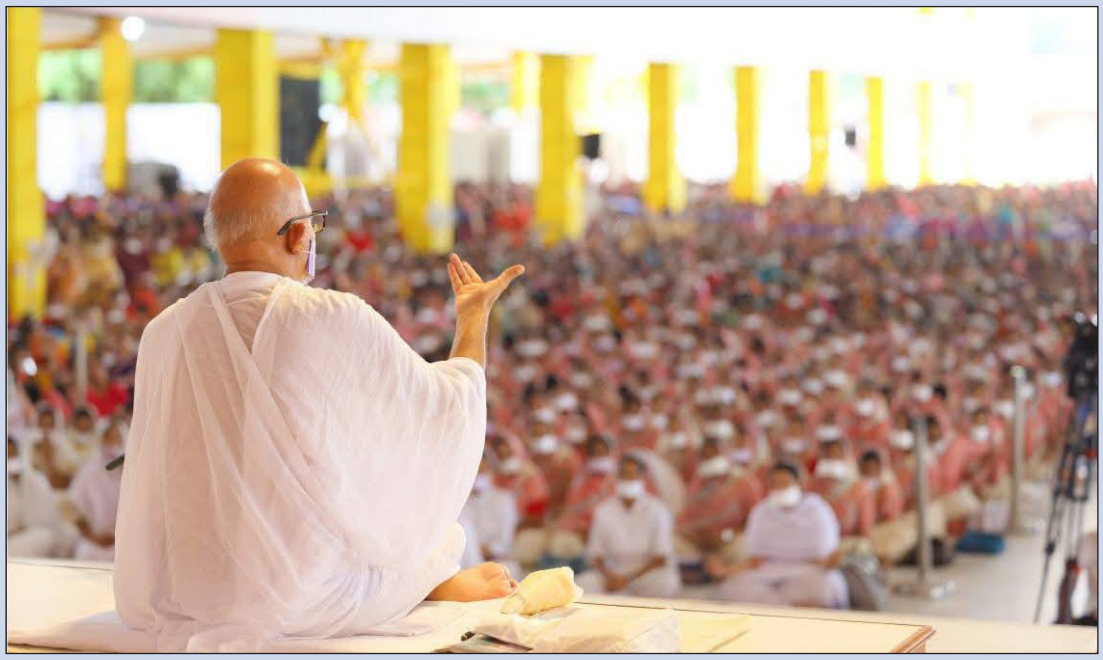

वीर भिक्षु समवसरण में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के एकादशम अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण ने आयारो आगम के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा – यह अहिंसा धर्म है, यह शुद्ध है, यह नित्य है, यह शाश्वत है और सर्वज्ञों के द्वारा लोक को जानकर प्रवेदित है। अहिंसा धर्म शुद्ध इसलिए है कि उसमें राग-द्वेष की कोई चीज नहीं है। जहाँ राग-द्वेष होता है, वहाँ अशुद्धता हो सकती है। अहिंसा राग-द्वेष रहित है।

हिंसा द्रव्य हिंसा हो सकती है, भाव हिंसा हो सकती है और द्रव्य-भाव हिंसा हो सकती है। द्रव्य हिंसा में प्राणी का मरण तो होता है, परंतु संबंधित व्यक्ति को पाप नहीं लगता। भाव हिंसा में प्राणी न भी मरे, तो भी संबंधित व्यक्ति को पाप लगता है। द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा दोनों संयुक्त हों तो प्राणी भी मरता है और वधक व्यक्ति को पाप भी लगता है। इस प्रकार हिंसा के तीन प्रकार हो जाते हैं।

जैसे एक महामुनि भावितात्मा अणगार साधु चल रहा है, जागरूक है, प्रमाद में नहीं है, परंतु योग-संयोग से कोई एक प्राणी पैर के नीचे आ गया, प्राणी का प्राण नियोजन हो गया, साधु के पाँव के कारण प्राणी मरा है — यहाँ हिंसा तो हुई है, परंतु यह द्रव्य हिंसा है। प्राणी के मर जाने पर भी भावितात्मा अणगार को पाप नहीं लगेगा।

भाव हिंसा में हम देखें कि एक शिकारी बाण हाथ में लिए है, सामने एक हिरण पर शिकार का लक्ष्य है। उस शिकारी ने बाण छोड़ा और संयोग से वह हिरण थोड़ा आगे हो गया। निशाना दीवार पर लगा। यहाँ मृग मरा नहीं है, लेकिन शिकारी पाप का भागी बन गया क्योंकि शिकारी ने अपनी ओर से हिंसा का कार्य कर दिया। यह भाव हिंसा है।

तीसरा उदाहरण – कोई शिकारी धनुष-बाण हाथ में लिए बाण छोड़ता है, बाण मृग को लग गया और मृग मर गया। यहाँ द्रव्य हिंसा भी है और भाव हिंसा भी है।

आयारो में कहा गया है — यह अहिंसा धर्म है, शुद्ध है, शाश्वत है। मन में हिंसा के भाव न हों। अहिंसा का सर्व प्राणातिपात विरमण के रूप में त्याग होना बहुत बड़ी अहिंसा है। तीन करण – तीन योग से, अर्थात् नव कोटि से साधु के हिंसा का त्याग होता है। श्रावक का त्याग साधु जितना नहीं होता, परंतु साधुओं की साधना की अनुमोदना करने की भावना हो कि मैं भी साधुओं की तरह साधना में आगे बढ़ूँ। जितना हिंसा का त्याग हो सके, वह त्याग हम करते रहें।

उपासक श्रेणी को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि केवल ज्ञान करना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु प्रश्नों का समाधान किस प्रकार किया जाए — यह योग्यता भी होना आवश्यक है। अतः उपासक प्रवेत्ता भी बनें और प्रवक्ता भी बनें।

आचार्यश्री ने 'तेरापंथ प्रबोध' का संगान एवं सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत कर श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक ऊर्जा से अभिसिंचित किया। उनकी मंगलवाणी के उपरांत साध्वीवर्याजी ने भी उद्बोधन के माध्यम से जनसमूह को आत्मविकास की दिशा में प्रेरित किया। इस अवसर पर तपस्वियों ने आचार्यश्री के श्रीमुख से अपनी-अपनी तपस्याओं का प्रत्याख्यान किया। साथ ही, पारसमल दूगड़, डॉ. अमित बाबेल एवं डॉ. रूचि खाब्या ने अपने भावपूर्ण विचारों के माध्यम से श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आलस्यवश कल पर नहीं टालें अच्छा काम : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
27 जुलाई, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अनुशास्ता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा— 'अध्यात्म की भावना और भौतिकता का आकर्षण — ये दोनों एक-दूसरे के विरोधी प्रतीत होते हैं। जहाँ अध्यात्म का आकर्षण पुष्ट होगा, वहाँ भौतिक आकांक्षाएँ, कामनाएँ और लालसाएँ कमजोर हो सकती हैं और जहाँ भौतिकता का अधिक आकर्षण तथा सुख-सुविधाओं की तीव्र लालसा होती है, वहाँ आध्यात्मिक भाव नगण्य, कमजोर या नष्टप्राय हो सकता है।

हमारे जीवन में भौतिकता भी है और आत्मा भी। हमारा पूरा जीवन दो तत्त्वों — आत्मा और पुद्गल — से बना हुआ है। जहाँ केवल आत्मा होती है, जैसे सिद्ध भगवान की स्थिति में, वहाँ शरीर नहीं होता और वे जन्म-मरण से मुक्त होते हैं। वहीं जहाँ केवल शरीर हो और आत्मा न हो, वहाँ जीवन भी संभव नहीं।

शास्त्र में कहा गया है कि जब मनुष्य मृत्यु के विषय में अवबोध प्राप्त कर लेता है, तब उसके लिए कोई भी समय अनवसर या अनुपयुक्त नहीं रहता। अनित्यता की भावना भीतर विरक्ति का भाव उत्पन्न कर सकती है। बारह भावनाओं में पहली भावना अनित्यता की ही है। प्रेक्षाध्यान पद्धति में भी एक प्रयोग है — अनित्य अनुप्रेक्षा, जिसमें अनित्यता के चिंतन का क्रम चलता है।

मृत्यु के विषय में कहा गया है कि इसका कोई निश्चित समय नहीं होता — यह कभी भी आ सकती है। इसके अनेक द्वार और मार्ग हो सकते हैं — जैसे आयुष्य पूर्ण होने पर, दुर्घटना या बीमारी के कारण, अथवा आत्महत्या या धार्मिक कारणों से अनशन द्वारा भी मृत्यु संभव है।

मनुष्य को यह समझना चाहिए कि वह संसार में अमर नहीं है। कोई भी अच्छा कार्य, जो वह आज कर सकता है, उसे आलस्यवश कल पर नहीं टालना चाहिए। कोई भी धार्मिक कार्य हो, तो उसे तुरंत प्रारंभ करना चाहिए।

जैसे-जैसे उम्र बढ़े, वैसे-वैसे जीवन में बदलाव लाना चाहिए। 75 वर्ष की आयु के बाद व्यक्ति को धर्म की ओर एक निर्णायक मोड़ लेना चाहिए और अधिकाधिक धार्मिक व आध्यात्मिक साधना में स्वयं को नियोजित करने का प्रयास करना चाहिए। सामायिक, त्याग-प्रत्याख्यान, स्वाध्याय आदि में मन लगाना चाहिए। सांसारिक प्रवृत्तियों से निवृत्ति की ओर प्रस्थान करना चाहिए।

तेरापंथ की बेटियों को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि वे जहाँ भी रहें, अपनी धार्मिक आस्था और संस्कारों को सदैव अपने साथ बनाए रखें।

साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने संबोधन में कहा कि माँ का एक बालक के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। एक अशिक्षित माँ भी अपने बालक को श्रेष्ठ संस्कार देकर उसके जीवन व चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मुमुक्षु मंगल भावना समारोह

पीतमपुरा, दिल्ली।

'शासनश्री' साध्वी सुव्रतांजी के सान्निध्य में खिलौनी देवी धर्मशाला, पीतमपुरा में उदासर निवासी मुमुक्षु रश्मि महनोत का मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ।कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ।

साध्वीश्री ने मुमुक्षु रश्मि को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा— 'व्रतों को जीवन में धारण कर, असंयम से संयम, भोग से त्याग तथा संसार से मोक्ष की ओर सफलतापूर्वक प्रस्थान करना।' अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा— 'साधु जीवन में राग का रंग नहीं चढ़ता। प्राणांतकारी कष्टों के आने पर भी सच्चा साधु स्वीकृत पाँच महाव्रतों को नहीं छोड़ता, न ही मोह-माया से प्रभावित होता है और पाँचों इन्द्रियों को संयम की ढाल से सुरक्षित रखता है।' साध्वी सुमनप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जीवन का सच्चा आनंद सुख-सुविधा और भोग में नहीं, अपितु त्याग, तप और संयम में है।

साध्वी चिंतनप्रभा जी ने कहा— 'तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होकर गुरुचरणों में निश्चिंत जीवन जीते हुए आत्मविकास की ओर अग्रसर होना परम सौभाग्य की बात होती है।' साध्वी कार्तिकप्रभा जी एवं साध्वी चिंतनप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका के माध्यम से संयम के महत्व को रेखांकित करते हुए दीक्षार्थी के प्रति मंगलभावना व्यक्त की।

मुमुक्षु रश्मि ने संयम जीवन की प्रेरणा में योगभूत बने समस्त चरित्रात्माओं एवं परिजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा— 'जो व्यक्ति जीवन में अवसरों का सम्यक उपयोग कर लेता है, उसका जीवन धन्य बन जाता है।' कार्यक्रम की शुरुआत पीतमपुरा क्षेत्र की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुई। मुमुक्षु रश्मि का जीवन परिचय प्रीति महनोत ने प्रस्तुत किया। उल्लेखनीय है कि वे 3 सितम्बर 2025 को अहमदाबाद में परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमण जी के कर-कमलों से दीक्षा ग्रहण करेंगी।

परिवार की ओर से मधु महनोत, बबिता बोथरा, वरुणा बोथरा, प्रीति महनोत एवं प्रियंका महनोत ने भावपूर्ण गीतिका के माध्यम से दीक्षार्थी के प्रति मंगलभावना व्यक्त की।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दिल्ली के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति दिल्ली के उपाध्यक्ष शुभकरण बोथरा सहित विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं वक्ताओं ने अपने वक्तव्य और गीतिकाओं के माध्यम से मुमुक्षु रश्मि के प्रति मंगलभावना व्यक्त की।कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में विमल महनोत का सराहनीय सहयोग रहा। समारोह का सफल संचालन महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़ ने किया तथा आभार ज्ञापन विनीत महनोत ने किया।

वीतरागता का पथ ही है शूरवीरता का मार्ग

मदुरै।

मुनि हिमांशु कुमार जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी बहिन वीनू संकलेचा के सम्मान में मंगल भावना समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं कषाय उपशम ध्यान के साथ हुआ।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष गौतमचंद गोलेछा ने स्वागत भाषण में मंगल भावना प्रकट की। निवर्तमान अध्यक्ष अशोक जीरावला ने दीक्षार्थी बहिन का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। इस अवसर पर तेयुप प्रचार मंत्री राजकुमार जी. नाहटा एवं तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष ओमप्रकाश कोठारी ने भी अपने विचारों के माध्यम से दीक्षा पथ पर अग्रसर बहिन की संयम यात्रा की अनुमोदना की।

मुनि हिमांशु कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा, 'दो प्रकार के वीर होते हैं – सांसारिक और आध्यात्मिक। वीतरागता का पथ ही शूरवीरता का मार्ग है।' मुनि हेमंत कुमार जी ने 'शूरवीर' की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि त्यागी वही होता है जो स्वेच्छा से भोग-विलास को त्याग देता है — वही सच्चा शूरवीर होता है। दीक्षार्थी बहिन वीनू संकलेचा ने अपने विचार साझा करते हुए बताया कि उन्होंने संयम मार्ग क्यों चुना तथा किस प्रेरणा से यह निर्णय लिया।

तेरापंथ सभा मदुरै की ओर से दीक्षार्थी बहिन का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में बहिन वीनू संकलेचा के पिता देवराज संकलेचा ने सभी श्रद्धालुओं को 3 सितम्बर 2025, अहमदाबाद में आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में आयोजित समणी दीक्षा समारोह में सादर आमंत्रित किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा दीपिका फुलफगर ने किया।

दायित्व ग्रहण एवं शपथ ग्रहण समारोह

टोहाना।

तेरापंथ के एकादशम अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या समणी जयंतप्रज्ञा जी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर समणी जयंतप्रज्ञा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में पद-लोलुपता का कोई स्थान नहीं है। पद केवल एक संवैधानिक एवं सामाजिक औपचारिकता है, और प्रत्येक व्यक्ति एवं श्रावक को धर्मसंघ के विकास हेतु निष्ठापूर्वक कार्य करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि सबसे बड़ा व्यक्ति वही होता है जो निष्ठा के साथ कार्य करता है।

समणी जी ने सभी नव-निर्वाचित पदाधिकारियों से आह्वान किया कि वे अपने पद की गरिमा अनुरूप कार्य करें, धर्मसंघ के विकास हेतु स्वयं को समर्पित करें, बड़ों का सम्मान करें, उनकी उचित सलाह लें तथा छोटों को भी अपने साथ जोड़कर चलें। इस अवसर पर निवर्तमान अध्यक्ष रजनी मोदी ने वर्तमान अध्यक्ष आरती जैन को अध्यक्ष पद की शपथ दिलवाई। आरती जैन ने अपनी नई कार्यकारिणी के रूप में ममता जैन को उपाध्यक्ष, निशा जैन को मंत्री, सरोज जैन को कोषाध्यक्ष, सुनीता जैन को सहमंत्री, ज्योति जैन को संगठन मंत्री एवं शिवानी जैन को प्रचार-प्रसार मंत्री के रूप में शपथ ग्रहण करवाई।

गुरु के आशीर्वाद से ही संभव है शिष्य की सफलता

जवाहर नगर, जयपुर।

महातपस्वी युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी मधुस्मिता जी ने उल्लास और उमंग से भरे वातावरण में विनोद संचेती के घर से एक भव्य और विशाल जुलूस के साथ लाल जैन मंदिर, महावीर साधना केंद्र, जवाहर नगर, जयपुर में मंगलमय प्रवेश किया।

स्वागत समारोह का शुभारंभ श्री जैन श्वेतांबर संघ, जवाहर नगर महिला मंडल द्वारा किया गया। अध्यक्ष उम्मेद कुमार मूसल ने स्वागत वक्तव्य देते हुए पधारे साध्वी वृंद, अतिथिगण और समस्त पदाधिकारियों का हृदय से अभिनंदन किया।

तेरापंथ महिला मंडल, जयपुर शहर की ओर से स्वागत गीत की प्रस्तुति दी गई। जवाहर नगर सहित आदर्श नगर, तिलक नगर और जनता कॉलोनी से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही। तेरापंथ सभा, जयपुर के अध्यक्ष शांतिलाल गोलछा ने स्वागत के साथ ऐतिहासिक चातुर्मास की मंगलकामना व्यक्त की। मंत्री सुरेंद्र सेखानी ने साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी का संदेश वाचन कर साध्वी वृंद और श्रावक समाज के उत्साह को और अधिक सशक्त किया।

तेरापंथ महिला मंडल, सी-स्कीम की ओर से प्रज्ञा सुराणा ने स्वागत भाषण दिया। साध्वी धन्यप्रभा जी ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथ युवक परिषद की ओर से शरद बरडिया ने तथा युवा प्रकोष्ठ, जवाहर नगर की ओर से आशीष छजलानी और शशांक चौधरी ने साध्वी वृंद का स्वागत करते हुए चातुर्मासिक सफलता की शुभकामनाएं दीं।

साध्वी सहजयशा जी ने चातुर्मास को धर्म की फसल उगाने का समय बताते हुए श्रावक-श्राविका समाज को धर्माराधना की प्रेरणा दी और पाली में चातुर्मास करने वाली साध्वी काव्यलता जी द्वारा भेजे गए मंगलभावना पत्र का वाचन किया।

साध्वी अक्षयप्रभा जी और साध्वी प्रदीपप्रभा जी ने भी श्रावक-श्राविकाओं को चातुर्मास में विशेष रूप से त्याग, तपस्या और आत्मिक साधना करने की प्रेरणा प्रदान की। खरतरगच्छ संघ, जयपुर के अध्यक्ष पदम पुगलिया ने भी स्वागत प्रस्तुत किया। जैन एकता समग्र परिषद के अनुरोध पर साध्वी मधुस्मिता जी ने अपने प्रवचन में उपस्थित श्रद्धालुओं के स्वागत को स्वीकार करते हुए कहा कि इस वर्ष परम पूज्य गुरुदेव की असीम अनुकंपा, अनुग्रह और मेहरबानी से यह चातुर्मास जैन समाज के चारों संप्रदायों—खरतरगच्छ, तपागच्छ, स्थानकवासी और तेरापंथी—के बीच प्रदान हुआ है। उन्होंने इसके लिए परम पूज्य आचार्य प्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की और कहा कि शिष्य की सफलता गुरु के आशीर्वाद, अनुग्रह और ऊर्जा से ही संभव बनती है।

उन्होंने सत्संग की महिमा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैसे पारस पत्थर लोहे को सोना बना देता है, वैसे ही सत्संग श्रवण से पापी भी पुनीत बन जाता है। उन्होंने आचार्य श्री भिक्षु के त्रिशताब्दी जन्म वर्ष के उपलक्ष्य में तेले की तपस्या करने की प्रेरणा दी।

चातुर्मासिक प्रवेश के संदर्भ में उन्होंने स्वयं द्वारा रचित एक गीत का सुमधुर संगान किया तथा जीवन को सरस, मधुर और समुन्नत बनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करने की प्रेरणा दी—जैसे कि सकारात्मक सोच बनाए रखना, समय का मूल्यांकन करना, उद्देश्यपूर्ण जीवन जीना, आत्मनियंत्रण विकसित करना, ग्रहणशील बनकर व्यक्तित्व को निखारना और तप-जप के मधुर फलों का आनंद लेना।

उन्होंने 31 वर्ष पूर्व जयपुर में संपन्न अपने चातुर्मास को याद करते हुए उस काल के श्रम, प्रयास और जागृति को स्मरण किया, जिसका उल्लेख ओम जैन और राजेंद्र बाठिया ने भावपूर्वक किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन जवाहर नगर संघ के नितिन दुगड़ द्वारा किया गया, जिन्होंने साध्वी वृंद का परिचय भी प्रस्तुत किया।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

-आचार्य श्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 अगस्त - 10अगस्त, 2025

गुरुमुखी और संघमुखी बनकर करें साधना

बालोतरा।

तेरापंथ भवन में साध्वी अणिमाश्री जी का डिजिटल डिटॉक्स रैली के साथ चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। भवन प्रवेश से पूर्व 'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभाजी ठाणा 3 ने सुमधुर गीत के साथ साध्वीश्री का स्वागत किया।

'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि चातुर्मास का समय आत्मोदय और आत्मोत्थान का समय होता है। आत्मा की अखंड ज्योति को प्रज्वलित करने के लिए साधु-साध्वियाँ अपने चातुर्मासिक स्थलों पर प्रवेश कर रहे हैं।

आज बालोतरा के विशाल तेरापंथ भवन में विराट व्यक्तित्व की धनी साध्वी अणिमाश्री जी का चातुर्मासिक प्रवेश हुआ। वे धर्मसंघ की विशिष्ट, प्रभावशाली, ज्ञान, विनय और अनुभव से संपन्न साध्वी हैं। उनके जीवन में प्रबुद्धता और विनम्रता का अद्भुत संयोग है। उनकी कार्यशैली और अनुशासन शैली बेजोड़ है। हम मंगल कामना करते हैं कि उनका यह बालोतरा पावस नया इतिहास रचे और उनके कर्तृत्व से संघ की कीर्ति चारों ओर फैले।

साध्वी अणिमाश्री जी ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह पूज्यप्रवर के निर्देश की पूर्णाहुति का पावन क्षण है। तेरापंथ धर्मसंघ एक अलबेला संघ है, जहाँ गुरु आज्ञा सर्वोपरि है।

गुरु आज्ञा ही प्राण, त्राण और शरण है। अपेक्षा है कि श्रावक समाज में गुरु भक्ति निरंतर अभिवर्धित होती रहे। सभी गुरुमुखी और संघमुखी बनकर साधना-आराधना करें।

साध्वीश्री ने आगे कहा-- श्रद्धेया साध्वीप्रमुखा श्री जी ने अपने संदेश में लिखा कि आपको बालोतरा जैसा श्रद्धावान क्षेत्र मिला है, अतः ऐसा लक्ष्य बनाएं कि हमें वैरागी-वैरागिण प्राप्त हों।

मैं आज श्रावक समाज से आह्वान करती हूँ कि हम पूज्यप्रवर की ऊर्जा और आशीर्वाद से सवाया कार्य करें और आप भी हमें ऐसा रिटर्न गिफ्ट दें, ताकि हम वैरागी-वैरागिण तैयार कर पूज्यप्रवर के चरणों में समर्पित कर सकें।

साध्वीश्री ने कहा कि चातुर्मासिक मंगल प्रवेश पर हमारा जो स्वागत हो रहा है, वह संघ, गुरु आज्ञा और गुरु कृपा का स्वागत है। इस चातुर्मास में तप-जप की गंगा में अवगाहन कर आत्मा को उज्जवल बनाएं। उन्होंने कहा कि यह उनका 28वां चातुर्मास है, लेकिन ऐसा पहला अवसर है जब शासनश्री स्वयं पट्ट पर विराजमान होकर आशीर्वाद देने हेतु उपस्थित हैं। उनके अनुभव और कौशल से हमारी कार्यशैली भी नया रंग लेगी। उनकी ऋजुता और मृदुता मन को अभिभूत करने वाली है। उनके आशीर्वाद से यह चातुर्मास सफल और सफलतम होगा, ऐसा विश्वास है।

साध्वी कर्णिकाश्री जी, डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी एवं साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने 'महाश्रमण स्पेशल स्पिरिचुअल रिसॉर्ट' की प्रस्तुति द्वारा चातुर्मासिक कार्यक्रमों की झांकी प्रस्तुत की। साध्वी ध्यानप्रभा जी, साध्वी ऋतुप्रभा जी और साध्वी श्रुतप्रभा जी ने अपने भावों की प्रस्तुति देते हुए गीतों के माध्यम से साध्वीवृंद की वर्धापना की। सभा उपाध्यक्ष ललित जीरावाला, महिला मंडल नवनिर्वाचित अध्यक्षा चंचल देवी भंडारी, पूर्व अध्यक्ष निर्मला संखलेचा, तेयुप नवनिर्वाचित अध्यक्ष संदीप रेहड़, निवर्तमान अध्यक्ष रौनक श्रीश्रीमाल, टीपीएफ अध्यक्ष रमेश भंसाली, अणुव्रत समिति नवनिर्वाचित अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा, ऋषि चोपड़ा, जयपुर सभा उपाध्यक्ष सुरेंद्र सेठिया और दिल्ली से समागत सरिता सेठिया ने अपने मंगल भावों की प्रस्तुति दी।

महिला मंडल ने 'चातुर्मासिक स्पेशल ट्रेन' की सुंदर प्रस्तुति के माध्यम से साध्वीवृंद का परिचय दिया और सामूहिक गीत का संगान किया। कार्यक्रम का सफल संचालन सभा मंत्री प्रकाश वेद ने किया।

शासनश्री' मुनिश्री रवीन्द्र कुमारजी के प्रति

● मुनि कमल कुमार ●

तुलसी गुरु कर कमल से, दीक्षा की स्वीकार।
शासन माता साथ में, नगर केलवा द्वार।।

अग्रगण्य बनकर किया, धर्म संघ का काम।
सजग साधना में सतत, मुनिवर आठों याम।।

महाप्रज्ञ महाश्रमण की, कृपा मिली अपार।
सहयोगी हर कार्य में, मुनिवर अतुल कुमार।।

जन्में भी मेवाड़ में, वहीं बने थे संत।
देवलोक मेवाड़ में, बना सुनहरा ग्रंथ।।

कर उत्तरोत्तर साधना, प्राप्त करें शिवपंथ।
'कमल' हृदय की भावना, हो भव-भव का अंत।।

सामाजिक सेवा कार्य

जसोल। अणुव्रत समिति जसोल के तत्वावधान में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, अमरपुरा जसोल में पुष्पराज कैलाशचंद कोठारी परिवार द्वारा विद्यालय को कंप्यूटर, प्रिंटर एवं 14 बड़ी दरियां भेंट की गईं। विद्यालय की प्रधानाचार्य सरोज भाटी ने कहा कि अणुव्रत की प्रेरणा एवं विद्यालय प्रशासन की मेहनत रंग ला रही है।

संक्षिप्त खबर

हॉस्पिटल में प्लास्टिक रीसाइकलिंग मशीन का हुआ लोकार्पण

चेंबूर, मुंबई। तेरापंथ महिला मंडल चेंबूर द्वारा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सराहनीय पहल करते हुए प्लास्टिक रीसाइक्लिंग मशीन की स्थापना की गई। इसका उद्घाटन सुराना सेठिया हॉस्पिटल में डॉ. डी. सी. सुराना एवं सरिता डागा द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

इस गरिमामय अवसर पर महामंत्री नीतू ओस्तवाल, कोषाध्यक्ष तरुणा बोहरा एवं क्रांति सुराना की विशेष उपस्थिति रही। इस कार्य के प्रायोजक संदीप दुगड़ रहे, जिन्होंने इस योगदान को अपनी माताजी, स्वर्गीय रजनी जी की पुण्य स्मृति में समर्पित कर भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

यह मशीन न केवल प्लास्टिक कचरे के प्रभावी निपटान का माध्यम बनेगी, बल्कि समाज में पर्यावरण के प्रति सजगता का संदेश भी प्रेषित करेगी।

वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित

उदयपुर। तेरापंथ युवक परिषद् उदयपुर द्वारा अणुव्रत समिति के संयुक्त तत्वावधान में पीएम श्री फतह सीनियर सेकेंडरी स्कूल, उदयपुर में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

तेयुप अध्यक्ष अशोक चौरड़िया ने युवाओं से प्रकृति को हरा-भरा बनाए रखने का आह्वान किया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति की अध्यक्षा प्रणिता तलेसरा, कुंदन भटेवरा तथा तेरापंथ युवक परिषद् से पिंटू चिप्पड़, महावीर राठौड़, निवर्तमान अध्यक्ष भूपेश खमेसरा, तेयुप प्रबंध मंडल, कार्यसमिति सदस्य एवं किशोर मंडल साथी गौरव पोरवाल उपस्थित रहे।

विद्यालय की ओर से वाइस प्रिंसिपल सीमा पांडे, योगेंद्र भाटी आदि गणमान्य जनों की गरिमामयी उपस्थिति रही। अंत में परिषद् मंत्री विनीत फुलफगर द्वारा आभार प्रकट किया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में आयोजित मंत्र दीक्षा कार्यशाला में संभागी क्षेत्रों की जानकारी

क्रमांक	स्थान/ परिषद्	सान्निध्य
1	अहमदाबाद एवं अमराईवाडी ओढ़व	युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी
2	पाली	साध्वी काव्यलता जी
3	मैसूर	साध्वी सिद्धप्रभा जी
4	केजीएफ	साध्वी पावनप्रभा जी
5	बायतु	'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी
6	साक्री	मुनि आलोक कुमार जी
7	हुब्बली	मुनि विनीत कुमार जी
8	सवाई माधोपुर	साध्वी लक्ष्यप्रभा जी
9	नोखा	'शासन गौरव' साध्वी राजीमती जी
10	किलपॉक, चेन्नई	मुनि मोहजीत कुमार जी
11	धूरी	साध्वी कनकरेखा जी
12	राजराजेश्वरी नगर	साध्वी पुण्ययशा जी
13	विक्रोली	'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी
14	पीलीबंगा	डॉ. मुनि विनोद कुमार जी
15	गंगापुर	मुनि प्रसन्न कुमार जी
16	विजयनगर	साध्वी संयमलता जी
17	गांधीनगर, राजाजीनगर तथा हनुमंतनगर	डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी
18	बालोतरा	साध्वी अणिमाश्री जी
19	सरदारपुरा	साध्वी कुंदनप्रभा जी
20	हैदराबाद	डॉ. साध्वी गवेषणाश्री जी
21	गगांवती	मुनि आकाश कुमार जी
22	पर्वत पाटीया	उपासक चन्द्रप्रकाश परमार
23	सेलम	------

शपथ ग्रहण समारोह

जोधपुर। तेरापंथ भवन में साध्वी कुंदनप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद सरदारपुरा और अणुव्रत समिति जोधपुर का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत विजय गीत से हुई, जिसके बाद निवर्तमान अध्यक्ष मिलन बांठिया ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। सभाध्यक्ष सुरेश जीरावाला ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया। तेयुप निववर्तमान अध्यक्ष मिलन बांठिया ने सत्र 2024 -25 में तेयुप द्वारा कृत कार्यों की झलक प्रस्तुत की तथा नवनियुक्त अध्यक्ष मनसुखलाल संचेती को शपथ ग्रहण कराई। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष डॉ. एकलव्य भंसाली और उनकी टीम को विजयराज मेहता ने शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित किया गया।

साध्वी कुंदनप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में नव मनोनीत अध्यक्ष और गठित टीम के सभी सदस्यों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि संघ के प्रति सभी श्रावक-श्राविका को अपना दायित्व निभाना चाहिए। साध्वीश्री ने युवा पीढ़ी को नैतिक मूल्यों और राष्ट्र हितों के प्रति समर्पित होने की प्रेरणा दी और कहा कि समाज और राष्ट्र का विकास तभी संभव है जब युवा पीढ़ी आदर्श बने। उन्होंने सभी संस्थाओं के सदस्यों को धर्म में आगे बढ़ने और संघ व देश के विकास में योगदान देने की मंगलकामना की। जोधपुर की सभी संस्थाओं को मिलजुल कर कार्य करने की शुभाशंसा भी दी। आभार ज्ञापन तेयुप सरदारपुरा के मंत्री देवीचंद तातेड़ ने किया। शपथ ग्रहण कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन नरेंद्र सेठिया ने किया।

जसोल। अणुव्रत समिति जसोल के निवर्तमान अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने नव-निर्वाचित अध्यक्ष महावीर सालेचा को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। तत्पश्चात, नवगठित पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी टीम को अध्यक्ष महावीर सालेचा द्वारा शपथ दिलाई गई। इनमें उपाध्यक्ष (प्रथम) रेखा डोसी, उपाध्यक्ष (द्वितीय) प्रवीण भंसाली, मंत्री सफरु खान, सह मंत्री (प्रथम) डिंपल श्रीश्रीमाल, सह मंत्री (द्वितीय) कोमल कंकु चौपड़ा, कोषाध्यक्ष भीखचंद छाजेड़, संगठन मंत्री मंजूदेवी डोसी, प्रचार-प्रसार मंत्री डूंगरचंद बागरेचा, मीडिया प्रभारी कान्तिलाल ढेलडिया एवं मुख्य प्रभारी भूपतराज कोठारी को मनोनीत किया गया।

इस अवसर पर साध्वी रतिप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि मनुष्य को संयम, सादगी, नैतिकता एवं प्रामाणिकता की प्रेरणा देने वाला मंत्र है 'अणुव्रत'। कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत गीतिका 'संयममय जीवन हो' के मंगलाचरण से हुई। अणुव्रत प्रभारी एवं तेरापंथ सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन करते हुए अपने विचार साझा किए। निवर्तमान अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने बताया कि छोटे-छोटे व्रतों एवं नियमों को अपनाकर समाज की सहभागिता सुनिश्चित की जा सकती है। कार्यक्रम का सफल संचालन मीडिया प्रभारी कान्तिलाल ढेलडिया ने किया। इस अवसर पर समाज के अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

गंगाशहर। तेरापंथ भवन में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल, गंगाशहर का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर मुनिश्री ने महिला जगत के लिए आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त अवदानों का स्मरण करते हुए मंडल की बहनों का उत्साहवर्धन किया एवं उन्हें अपने सामर्थ्य का विस्तार करते हुए नया इतिहास रचने का आह्वान किया। समारोह में निवर्तमान अध्यक्ष संजू लालाणी ने नवमनोनीत अध्यक्ष प्रेम बोथरा व उनकी टीम को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस क्रम में मीनाक्षी आंचलिया व बिंदु छाजेड़ ने उपाध्यक्ष, रेखा चौरड़िया ने मंत्री, सुधा भरा ने कोषाध्यक्ष, सुप्रिया राखेचा व सुनीता पुगलिया ने सह मंत्री, ऋतु राखेचा ने संगठन मंत्री तथा सीमा बोथरा ने प्रचार-प्रसार मंत्री के रूप में शपथ ग्रहण की। अध्यक्ष प्रेम बोथरा ने हेमा पारख को कन्या मंडल प्रभारी एवं सुनीता डोसी को सह प्रभारी मनोनीत किया। कन्या मंडल संयोजिका के रूप में मुस्कान सिंघी एवं सह संयोजिका के रूप में गरिमा भंसाली की नियुक्ति की गई। इस अवसर पर तेरापंथी सभा के मंत्री जतनलाल संचेती, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के किशन बैद, तेयुप के मंत्री मांगीलाल बोथरा, अणुव्रत समिति के मंत्री कन्हैयालाल बोथरा एवं वरिष्ठ श्रावक लूणकरण छाजेड़ ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित कीं। कार्यक्रम का कुशल संचालन पूर्व मंत्री मीनाक्षी आंचलिया द्वारा किया गया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **गंगाशहर।** मनोज-सुनीता देवी डागा के सुपुत्र एवं पुत्रवधू ऋषभ - प्रज्ञा डागा निवासी गंगाशहर की नवजात पुत्री रत्न का नामकरण संस्कार संस्कारक पवन छाजेड़, देवेन्द्र डागा, विपिन बोथरा ने विधि विधान पूर्वक जैन संस्कार विधि से करवाया गया।

■ **गंगाशहर / मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया।** गंगाशहर निवासी धर्मचंद - लीला देवी बोथरा के सुपुत्र एवं पुत्रवधू मोहन-शिखा बोथरा के नवजात पुत्र रत्न का नामकरण संस्कार मेलबॉर्न ऑस्ट्रेलिया में ऑनलाइन माध्यम से जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। जैन संस्कारक पवन छाजेड़, देवेन्द्र डागा, विपिन बोथरा ने विधि विधान पूर्वक जैन संस्कार विधि से नामकरण करवाया ।

सबको साथ लेकर मंडल के विकास हेतु कार्य करें

हैदराबाद।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, डी. वी. कॉलोनी में तेरापंथ महिला मंडल का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। सर्वप्रथम साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

महिला मंडल की निवर्तमान अध्यक्ष कविता आच्छा ने सभी आगंतुक श्रावक-श्राविकाओं का आत्मीय स्वागत किया। साध्वी मेरुप्रभा जी ने गीतिका का भावपूर्ण संगान किया। इसके बाद सत्र 2023–25 की अध्यक्ष कविता आच्छा ने सत्र 2025–27 के लिए नव-निर्वाचित अध्यक्ष नमिता सिंघी को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। अध्यक्ष नमिता सिंघी ने अपनी संपूर्ण कार्यकारिणी टीम को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। नव-गठित कार्यकारिणी में प्रथम उपाध्यक्ष सुशीला मोदी, द्वितीय उपाध्यक्ष प्रभा दुगड़, मंत्री निशा सेठिया, सहमंत्री प्रथम मीनाक्षी सुराणा, सहमंत्री द्वितीय संगीता गोलछा, प्रचार-प्रसार मंत्री मनीषा सुराणा एवं संगठन मंत्री के रूप में प्रेम संचेती ने शपथ ग्रहण की। कन्या मंडल संयोजिका के रूप में सुरभि बोथरा एवं सह-संयोजिकाओं के रूप में यशा बुच्चा और पूर्वी सेठिया की नियुक्ति की गई। मंडल की संरक्षिकाओं एवं परामर्शक बहनों ने भी पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। नव-निर्वाचित अध्यक्ष नमिता सिंघी ने पीपीटी प्रस्तुति के माध्यम से कार्यकारिणी का सुंदर परिचय प्रस्तुत किया।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने पूर्व अध्यक्ष व मंत्री को सफल कार्यकाल हेतु साधुवाद अर्पित किया एवं सत्र 2025–27 की नई टीम को मंगलकामनाएं प्रेषित करते हुए कहा कि नई तकनीक के साथ अध्यात्म के धरातल पर रहते हुए सबको साथ लेकर मंडल के विकास हेतु कार्य करें।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुशील संचेती, तेयुप अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा, नव-निर्वाचित अध्यक्ष राहुल गोलछा, टीपीएफ अध्यक्ष विरेन्द्र घोषल, अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेन्द्र बोथरा, हिंदी मिलाप की पूर्व संपादिका सरिता बैद, प्रभा दुगड़, सम्पत सिंघी एवं नेहा जैन सहित अन्य गणमान्यजनों ने महिला मंडल की नई कार्यकारिणी को सफल कार्यकाल हेतु शुभकामनाएं प्रेषित कीं। कार्यक्रम का संचालन पूर्व मंत्री सुशीला मोदी ने कुशलतापूर्वक किया एवं धन्यवाद ज्ञापन मंत्री निशा सेठिया द्वारा प्रस्तुत किया गया।

विघ्न निवारक, मंगलकारक, सर्व सिद्ध बीज मंत्र अनुष्ठान का आयोजन

विजयनगर, बैंगलोर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा विजयनगर के तत्वावधान में, साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में विघ्न निवारक, मंगलकारक बीज मंत्र अनुष्ठान का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि बीज मंत्र जप से अंतराय कर्मों का क्षयोपशम होता है। साथ ही, यह मंत्र अनुष्ठान स्वास्थ्यवर्धक होते हैं और जीवन में शांति प्रदान करते हैं। अनुष्ठान से हमारी सम्यक दृष्टि, श्रद्धा एवं भक्ति पुष्ट होती है। व्यक्ति धन की, गाँव की, शहर की या पद की यात्रा करता है, लेकिन इस चातुर्मास काल में हमें सम्यकत्व की यात्रा करनी चाहिए। सम्यकत्व को प्राप्त करने में सबसे बड़ी बाधा है 'मैं और मेरा' – अर्थात अहंकार और आग्रह। हमें इनसे बाहर निकलने का प्रयास करना चाहिए।

साध्वी मार्दवश्री जी ने अनुष्ठान करवाते हुए बीज मंत्रों का लयबद्ध उच्चारण करवाया। 'ॐ' की प्रलंब ध्वनि एवं पिरामिड का रक्षा कवच बनवाया गया। साध्वीश्री ने कहा कि ये मंत्र हमारे शुभ नामकर्म के उदय से प्राप्त यश-कीर्ति के संवाहक होते हैं तथा रिद्धि-सिद्धि के हेतु होते हैं।

विभिन्न केंद्रों पर मंत्रोच्चार के साथ अनुष्ठान संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान ऋषभदेव की स्तुति से हुआ। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष मंगल कोचर, महिला मंडल अध्यक्ष महिमा पटावरी सहित विजयनगर, राजाजीनगर, हनुमंत नगर के श्रावक- श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
04 अगस्त - 10अगस्त, 2025

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष, वर्षावास स्थापना एवं तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

हुबली

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के शुभारंभ के अवसर पर मुनि विनीत कुमार जी ने आचार्य भिक्षु के विलक्षण व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे सत्य के अन्वेषक थे और उनकी साधना अद्वितीय थी। मुनिश्री ने बताया कि उन्होंने लगभग 38,000 पदों की रचना की, जो आज भी साहित्यिक दृष्टि से विशिष्ट माने जाते हैं। मुख्य अतिथि जगद्गुरु डॉ. सिद्धराज योगेंद्र महास्वामी ने तेरापंथ धर्मसंघ की सेवा और अनुशासन की प्रशंसा करते हुए मुनि विनीत कुमार जी एवं मुनि पुनीत कुमार जी के चातुर्मास हेतु मंगलकामनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा भिक्षु अष्टकम के मंगलाचरण से हुआ। सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम में महिला मंडल, तेयुप, अणुव्रत समिति सहित कई संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित रहे। प्रेक्षा संगीत सुधा की प्रस्तुति एवं समाजसेवी महेंद्र सिंघी की वाणी ने श्रोताओं को प्रभावित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि पुनीत कुमार जी ने किया, और आभार रमेश चोपड़ा ने व्यक्त किया। तेरापंथ स्थापना दिवस समारोह पर मुनि विनीत कुमार जी ने तेरापंथ की स्थापना पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी भीखणजी ने आचार-विशुद्धि और संघ की एकता पर बल देते हुए अनुशासित संगठन की नींव रखी। उन्होंने बताया कि तेरापंथ का विकास किसी स्वार्थ नहीं, बल्कि आत्मार्थिता की भावना से हुआ। उन्होंने जैन ग्रंथों से उदाहरण देते हुए समझाया कि भगवान महावीर के निर्वाण के बाद भस्म राशि और धूमकेतु जैसे ग्रहों के प्रभाव ने धर्म की गति को प्रभावित किया। जब यह प्रभाव समाप्त हुआ, तब तेरापंथ का पुनरुद्धार संभव हुआ।

गुरुपूर्णिमा पर मुनि विनीत कुमार जी ने कहा कि जहां गुरु होता है, वहां शिष्य तेजस्वी बनते हैं। मुनि पुनीत कुमार जी ने कहा—गुरु वही है जो अनुशासित हो, आत्मविश्वासी हो और प्रतिरोधात्मक शक्ति से युक्त हो। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल के सुमधुर संगान से हुआ। गौतम वेदमुथा, रमेश पालगोता, अशोक पालगोता सहित अन्य गणमान्यजन ने भी गीतों के माध्यम से अपनी भावनाएं प्रकट की।

कोलकाता

मुनि जिनेश कुमारजी के सान्निध्य में 266वां तेरापंथ स्थापना दिवस जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा (कलकत्ता पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा भिक्षु विहार, डिविनिटी पवेलियन में तप, जप एवं हर्षोल्लासपूर्वक आयोजित किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित थे। मुनि जिनेश कुमारजी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा—तेरापंथ के संस्थापक आचार्य भिक्षु का ध्येय संगठन बनाना नहीं था, किन्तु वे आध्यात्मिक क्रांति के पथ पर बढ़ते गए, कारवां स्वतः बनता गया और तेरापंथ जैसे सुदृढ़ धर्मसंघ का निर्माण हो गया।

विक्रम संवत 1817, आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन भावदीक्षा के साथ राजस्थान के केलवा में तेरापंथ की स्थापना हुई। आचार्यश्री भिक्षु चेतना के चतुर प्रहरी थे। वे चंचलता की चौखट पर चोट करने वाले थे। शिथिलता के स्वप्न को संयम के शीतल छींटों से तिरोहित कर देते थे। वे असत्य के खिलाफ आवाज उठाते थे और सत्य के सबल संपोषक व समर्थक थे। इस अवसर पर मुनि परमानन्दजी ने कहा—तेरापंथ की स्थापना के पीछे त्याग और बलिदानों की अमर कहानी है। मुनि कुणाल कुमारजी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। समारोह के प्रारंभ में महिला मंडल ने मंगलाचरण किया। पूर्वांचल तेरापंथी सभा अध्यक्ष संजय सिंघी, महिला मंडल अध्यक्षा बबीता तातेड़ ने भी अपने विचार रखे। आभार ज्ञापन सभा मंत्री पंकज डोसी ने किया तथा समारोह का कुशल संचालन मुनि परमानन्दजी ने किया।

सरदारपुरा, जोधपुर

'शासनश्री' साध्वी सत्यवतीजी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु के 300वें जन्मदिवस, आषाढ़ सुदी चौदस एवं तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर विशेष समायोजन किया गया। साध्वी रोशनीप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि महामना आचार्य भिक्षु प्रमोद भावना एवं सकारात्मक सोच के संवाहक थे। साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने गीतिका के माध्यम से भावों की प्रस्तुति दी और साध्वी पुण्यदर्शना जी ने प्रेरक प्रसंगों द्वारा आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों को उजागर किया। 'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी ने कहा — भिक्षु नाम में अपार शक्ति है। इस नाम का स्मरण मात्र ही समस्याओं का समाधान बन जाता है। चौदस की हाज़री का वाचन करते हुए मर्यादा और अनुशासन के प्रति सजगता का संदेश दिया गया। तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर साध्वी रोशनी प्रभा जी ने गीतिका द्वारा भावाभिव्यक्ति दी। साध्वी शशि प्रज्ञा जी ने कहा — जो व्यक्ति गण के प्रति शिथिल हो जाता है, वह जीवन के हर पड़ाव में अवरोध का अनुभव करता है। 'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी ने अपने संदेश में कहा — यह संघ, आचार्य भिक्षु का प्रसाद है, जिन्होंने अनुशासन रूपी वटवृक्ष की स्थापना की, और आज वर्तमान आचार्य प्रवर के शासन में यह सतत विकास की ओर अग्रसर है। आस्था से गूंजते इस आयोजन में सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, ममता तातेड़ एवं शालू तातेड़ ने गीतिका द्वारा भावपूर्ण प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ युवक परिषद के मंगलाचरण से हुआ। कुशल संचालन नरेंद्र सेठिया एवं साध्वी रोशनी प्रभा जी द्वारा किया गया।

विजयनगर, बैंगलोर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा विजयनगर द्वारा अर्हम् भवन में भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी समारोह एवं बोधि दिवस का आयोजन हुआ। साध्वी संयमलता जी ने कहा—आचार्य भिक्षु सत्यनिष्ठा और प्रखर बुद्धि के प्रतीक थे। उन्होंने कठिन संघर्षों का साहसपूर्वक सामना किया और धर्म को नया आयाम दिया। भिक्षु त्रिशताब्दी वर्ष के अवसर पर श्रावकों को तेला तप व मंत्र जप के अनुष्ठान की प्रेरणा दी गई। मुख्य वक्ता अरविंद मांडोत ने आचार्य भिक्षु को धर्म क्रांति के महामानव बताते हुए युवाओं में नेतृत्व विकास पर बल दिया। साध्वी मनीषाप्रभा जी ने 'ओम भिक्षु' मंत्र के सामूहिक जप की प्रेरणा दी। मुख्य अतिथि शिवरूद्र महास्वामी ने भी आचार्य भिक्षु की महत्ता को रेखांकित किया। महिला मंडल द्वारा लघु नाटिका, युवक परिषद द्वारा मंगलाचरण व सभा मंत्री दिनेश हिंगड़ द्वारा आभार ज्ञापन हुआ। चतुर्मासिक चौदस व चातुर्मास शुभारंभ के अवसर पर साध्वी संयमलताजी ने कहा—चातुर्मास आत्मशुद्धि का समय है। तेरापंथ धर्मसंघ की मर्यादा आज भी संघ की स्थिरता का आधार है। अगर यही मर्यादा परिवारों में आए, तो शांति सुनिश्चित हो सकती है। साध्वी रौनकप्रभा जी ने धार्मिकता को जीवन में लाने का आह्वान किया। मुख्य वक्ता संजय धारीवाल ने तेरापंथ संविधान की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन राजेश चावत ने किया। सभा अध्यक्ष मंगल कोचर ने तीन दिवसीय जप अनुष्ठान की जानकारी दी।

रात्रि काल में साध्वीश्री के सान्निध्य में 'भिक्षु अलौकिक काव्यधारा' का आयोजन किया गया। कवि मिट्ठू मिठास, मोनिका हठीला, सुरेंद्र सर्किट, देवकिशन व्यास और अमित चितवन ने जैन धर्म, महावीर स्वामी और आचार्य भिक्षु पर रचनाएं प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। कवियों का स्वागत सभा अध्यक्ष मंगल कोचर ने किया। आयोजन के अंत में प्रायोजकों का सम्मान किया गया। 266वें तेरापंथ स्थापना दिवस पर साध्वी संयमलताजी ने कहा—गुरु जीवन की दिशा बदलते हैं। आचार्य भिक्षु का जीवन साहस, स्मृति और मौलिक चिंतन से ओतप्रोत था। वे किसी संगठन को बनाने नहीं चले थे, लेकिन धर्म क्रांति के अग्रदूत बने। साध्वी वृंद ने तेरापंथ की स्थापना से लेकर उसके विकास की यशोगाथा प्रस्तुत की। छतरसिंह मालू और वीणा बैद ने विचार व्यक्त किए। तीनों दिन कार्यक्रम का संचालन साध्वी मार्दवश्री जी द्वारा किया गया। सभा अध्यक्ष मंगल कोचर, तेयुप अध्यक्ष विकास बांठिया सहित अनेक गणमान्यजन व श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

टोहाना

समणी जयंतप्रज्ञा जी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में 266वें तेरापंथ स्थापना दिवस का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ समणीजी ने नवकार महामंत्र के उच्चारण से किया। इसके पश्चात सभा अध्यक्ष विजय कुमार जैन तथा वरिष्ठ श्राविका सुमन जैन ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के मंत्री सुभाष जैन ने तेरापंथ स्थापना दिवस के संदर्भ में अपने उद्गार प्रकट किए। समणी जयंत प्रज्ञा जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारा सौभाग्य है कि हमें तेरापंथ धर्मसंघ प्राप्त हुआ। तेरापंथ धर्म के विकास और विस्तार में श्रद्धा, निष्ठा और विनय की मुख्य भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चारित्र — ये तेरापंथ के त्रिदेव हैं। इसी प्रकार आचार, विचार और अनुशासन — ये तेरापंथ के प्राण हैं। उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु को सत्यमार्ग पर चलने के लिए अनेक संघर्षों और चुनौतियों का सामना करना पड़ा, और इन्हीं संघर्षों ने तेरापंथ को नई गति प्रदान की। समणी सन्मतिप्रज्ञा जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हर नई शुरुआत के पीछे कोई विशेष प्रेरणा होती है। तेरापंथ की स्थापना के पीछे धर्म क्रांति, सत्य क्रांति और मर्यादाओं की रक्षा मुख्य कारण थे। आचार्य भिक्षु के गहन ज्ञान एवं आगम के क्षेत्र में योगदान ने ही तेरापंथ के उदय का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने गहन साधना के माध्यम से आत्मा और चेतना का विकास किया और सहज रूप में तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना हुई। समणी वृंद द्वारा इस अवसर पर एक सुमधुर गीतिका का संगान किया गया। कार्यक्रम के अंत में 'संघ गान' का भी संगान किया गया।

मदुरै

तेरापंथ भवन में आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष का भव्य शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर मुनि हिमांशु कुमार जी ने आचार्य श्री भिक्षु के जीवन आदर्शों और आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला। मुनिश्री ने उनके जीवन के कुछ विशिष्ट पहलुओं को रेखांकित करते हुए कहा— सम्यक्त्व की भावना से उन्होंने सूक्ष्म सत्य को जानने की गहन साधना की। उन्होंने भौतिक इच्छाओं से रहित जीवन जिया। वे उच्च कोटि के योगी थे, जिनकी साधना योगवाहिता का उत्कृष्ट उदाहरण है। मुनिश्री ने आह्वान किया कि आज के भौतिक युग में आचार्य भिक्षु जैसे आध्यात्मिक पुरुष के जीवन से प्रेरणा लेकर हमें आत्मोन्नति की ओर अग्रसर होना चाहिए। मुनि हेमंत कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु एक सत्यनिष्ठ साधक थे, जो जीवन में सत्य को आत्मसात करने का सतत प्रयास करते रहे। उनका कषाय उपशांत था और उनका व्यवहार अत्यंत विनम्र था। वे आत्मनिष्ठ योगी थे – जिन्होंने आत्मा के विकास को ही अपना लक्ष्य बनाया।

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष, वर्षावास स्थापना एवं तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

शाहदरा, दिल्ली

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु की 300वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में पूर्वी दिल्ली के शाहदरा क्षेत्र में गरिमामय समारोह का आयोजन किया गया। मेसिना बैंक्विट हॉल में संपन्न इस भव्य आयोजन में श्रद्धा, विचार और अनुशासन का त्रिवेणी संगम देखने को मिला। इस अवसर पर बहुश्रुत मुनि उदितकुमार जी ने आचार्य भिक्षु के जीवन-दर्शन, सम्यक दृष्टिकोण, तप-साधना और संतुलित जीवन शैली के सूत्रों को आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत करते हुए कहा— 'आचार्य भिक्षु का चिंतन आज भी हमारी जीवन दिशा को स्पष्ट करता है। उन्होंने जो आदर्श प्रस्तुत किए, वे केवल उस युग तक सीमित नहीं हैं, बल्कि आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।' मुनिश्री ने यह भी कहा कि उनका जीवन हमें साधना, तप और सेवा के महत्व को समझाता है। मुनि अभिजीतकुमार जी ने सभी श्रद्धालुओं से आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारने का आह्वान किया। वहीं, मुनि जागृतकुमार जी ने ध्यान प्रयोग कराए। कार्यक्रम का प्रारंभ मुनि रम्यकुमार जी द्वारा 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी' गीत के संगान से हुआ। कार्यक्रम में जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा शाहदरा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़, आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति दिल्ली के अध्यक्ष कन्हैयालाल पटावरी, विकास परिषद के संयोजक मांगीलाल सेठिया एवं अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की चीफ ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी आदि ने अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला से हर्ष नाहटा एवं मुस्कान नाहटा ने भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया। साथ ही, जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा दिल्ली की ओर से सामूहिक गीत प्रस्तुति दी गई। अंत में बाबूलाल दुगड़ ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रमोद घोड़ावत ने किया।

सिकंदराबाद

भिक्षु चेतना वर्ष के शुभारंभ के अवसर पर साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु तेरापंथ के प्रथम आचार्य थे। उनका जन्म वि. सं. 1783 आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी मंगलवार को हुआ। आज 300 वां जन्मदिवस है। आचार्य भिक्षु एक निर्भीक और प्रत्युत्पन्नमति आचार्य थे। उन्होंने अपनी जीवन तंत्री पर सदा सत्य का आलाप भरा। जनापवाद के शैवाल से घबरा कर किनारे पर बैठे रहना उन्होंने कभी पसंद नहीं किया। उनका आज बोधिदिवस भी है। बोधि का तात्पर्य है सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र की प्राप्ति। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा- जन्म लेना कोई बड़ी बात नहीं है, जीवन सार्थक बनाना बड़ी बात है। जन्मदिन उसी का महत्वपूर्ण है- जिनके जीवन में प्रेरणा है, प्रकाश है, तेजस्विता है। साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ ।

इस अवसर पर ज्ञानशाला, हैदराबाद द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी गई। महासभा के सदस्य लक्ष्मीपत बैद, टी.पी.एफ अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल, अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा, तेयुप अध्यक्ष अभिनन्दन नाहटा एवं राजेश सेठिया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। आभार ज्ञापन मंत्री हेमंत संचेती ने किया। साध्वी मेरुप्रभा जी ने कुशलतापूर्वक कार्यक्रम का संचालन किया। आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में तेरापंथ भवन, डी. वी. कॉलोनी में आयोजित समारोह के प्रथम दिवस का कार्यक्रम आध्यात्मिक और भावनात्मक रूप से अत्यंत प्रेरणादायक रहा। तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद द्वारा भव्य भिक्षु भजन संध्या का आयोजन किया गया, जो साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में संपन्न हुई। साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु का जन्म कंटालिया जैसे कठोर वातावरण में हुआ, पर उन्होंने सत्य की साधना करते हुए कांटों के बीच गुलाब की भांति धर्म संघ की स्थापना की।

सभा, सिकंदराबाद अध्यक्ष सुशील संचेती ने श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत किया एवं आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी अभिवंदना प्रेषित की। भजन संध्या में साध्वी मेरुप्रभाजी ने गीतिका के माध्यम से आराध्य को श्रद्धांजलि दी। इसके अतिरिक्त अशोक संचेती, शुभराज गधैया, सरला भूतोडिया, रौनक नाहटा, तेरापंथ युवक परिषद, भिक्षु प्रज्ञा मंडली सहित अनेक भजनकारों ने भावपूर्ण भजनों से श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन नवनीत छाजेड ने किया। सभा अध्यक्ष सुशील संचेती के साथ तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत समिति के पदाधिकारी, कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

पर्वत पाटीया

तेरापंथ धर्म संघ के आद्यप्रवर्तक महामना आचार्य श्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष का शुभारंभ पर्वत पाटिया में उपासक पवन छाजेड़ व चंद्रप्रकाश परमार की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ उपासक द्वय द्वारा नमस्कार महामंत्र के संगान से मंगलाचरण के साथ हुआ। उपासक द्वय ने एक वर्ष तक चलने वाले त्रिशताब्दी वर्ष के महत्व को रेखांकित करते हुए आचार्य भिक्षु की जीवन-यात्रा पर प्रकाश डाला। उन्होंने श्रावक समाज को आचार्य श्री भिक्षु के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। इस अवसर पर श्रावक समाज द्वारा तेले की तपस्या व एकासन तप का आयोजन किया गया, तथा रात्रिकालीन धम्म जागरण का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ।कार्यक्रम में महासभा के कार्यकारिणी सदस्य एवं सभा मंत्री प्रदीप गंग तथा तेयुप उपाध्यक्ष शैलेश चंडालिया ने अपने भाव व्यक्त किए। अंत में सभा उपाध्यक्ष संजय बोहरा ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

गुवाहाटी

मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी ने स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु का जन्म जिनशासन की प्रभावना के लिए ही हुआ था। वह समय राजनीतिक दृष्टि से उथल-पुथल का था। राजसत्ता समाप्त होती जा रही थी और अंग्रेजों ने राजाओं-महाराजाओं को गुलाम बनाकर देश को अपने अधीन कर लिया। उस समय जैन धर्म में बिखराव रुक नहीं रहा था। भगवान महावीर के निर्वाण के अनेकों वर्षों बाद भी जिनशासन में अनेक गच्छ बनते जा रहे थे। आचार्य भिक्षु ने भगवान महावीर की वाणी एवं परंपरा को आगे बढ़ाते हुए इस बिखराव को रोकने का कार्य किया। उन्होंने आगे चलकर एक अनुशासित एवं मर्यादित तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना की । मुनि रमेश कुमारजी ने आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के शुभारंभ पर जय सभागार में उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा कि व्यक्ति अपनी कृतियों से महान होता है। व्यक्ति की कृतियां उसकी मृत्यु के बाद ही आंकी जाती है तथा उसी अनुरूप उनकी कृतियां हजारों-लाखों वर्षों तक जीवित रहती हैं। इस दृष्टि से हम आचार्य भिक्षु को महान कह सकते हैं, जिनके द्वारा स्थापित आचार, विचार, अनुशासन एवं मर्यादा आज भी जीवित हैं। मुनि पद्म कुमार जी ने कहा कि हम आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों को पहचानेंगे तभी उनका जन्म दिवस मनाना सार्थक होगा। मुनि रत्न कुमार जी ने कहा कि महापुरुषों का जन्म दिवस आध्यात्मिक रूप से त्याग करके मनाएं तभी वह सार्थक होगा। इस अवसर पर तेरापंथी सभा के पदाधिकारियों ने सुमधुर गीतिका का संगान किया।

सिरियारी

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल परिसर के प्रांगण में आचार्य भिक्षु के 300वें जन्मोत्सव का विशेष कार्यक्रम 'शासनश्री' मुनि मणिलालजी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। केन्द्र निर्देशानुसार भिक्षु जप व स्तुति के पश्चात् मुनि मणिलालजी ने कहा— आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व और कर्तृत्व को व्यक्त करना असंभव है। उस महापुरुष को जानना, पहचानना, समझना और उनके बारे में बोलना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है, क्योंकि उनका जीवन विलक्षण था।

मुनि धर्मेशकुमारजी ने कहा— आचार्य भिक्षु एक महान योगी पुरुष थे। उनकी योग साधना विलक्षण थी। वे आत्मनिष्ठ थे। आत्मनिष्ठ व्यक्ति बहुत कम बोलते हैं, लेकिन उनका जीवन स्वयं बोलता है। ऐसे योगी पुरुष की आध्यात्मिक चेतना सदैव जागृत रहती है। वे सच्चे साधक होते हैं।

मुनि चैतन्यकुमार जी 'अमन' ने कहा— आचार्य भिक्षु जैसे महापुरुषों का अवतरण कभी-कभी ही होता है। उनकी सत्यनिष्ठा अद्भुत होती है। उन्होंने सत्य को खोजा, उसे पाया और अपने जीवन को न केवल स्वयं के लिए, बल्कि पर-कल्याण के लिए समर्पित कर दिया।

इस अवसर पर समाधि स्थल संस्थान के अध्यक्ष निर्मल श्रीश्रीमाल ने आगंतुक भक्तों का स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की। मुनि गिरिशकुमारजी, मुनि प्रतीककुमारजी एवं मुनि लक्ष्यकुमारजी ने भी श्रद्धा की अभिव्यक्ति करते हुए अपने विचार रखे। सिरियारी के ठाकुर दिलीपसिंह एवं श्यामसिंह ने भी अपनी आस्था व्यक्त की। आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी कार्यक्रम का शुभारंभ जैन ध्वज के ध्वजारोहण के साथ हुआ, जिसे संस्थान अध्यक्ष निर्मल श्रीश्रीमाल ने संपन्न किया। इस अवसर पर संस्थान के पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्यगण आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। अहमदाबाद से पधारी संगायिका निष्ठा टोडरवाल ने भजन प्रस्तुतियाँ देकर वातावरण को भक्ति रस में सराबोर कर दिया, जिसमें संगीत सहयोग राहुल बालड़ ने प्रदान किया। संगायिका निष्ठा टोडरवाल को संस्थान की ओर से स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में संस्थान के कोषाध्यक्ष गौतम कोठारी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संयोजन आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान के मंत्री मर्यादा कुमार कोठारी ने अत्यंत कुशलतापूर्वक किया।

नागपुर

संस्था शिरोमणि श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में तेरापंथी सभा, नागपुर द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक महामना आचार्यश्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के शुभारंभ समारोह का आयोजन अणुव्रत भवन में किया गया। नमस्कार महामंत्र के सामूहिक संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इसके पश्चात 'भिक्षु म्हारै प्रकट्या जी' गीतिका का सामूहिक संगान किया गया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष विजय रांका, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा सरिता आर. डागा, तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष नितेश छाजेड़ एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष राहुल कोठारी ने आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष पर अपने-अपने भाव व्यक्त किए तथा तेरापंथ धर्मसंघ में उनके द्वारा दिए गए अवदानों को स्मरण किया।

तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने भावपूर्ण गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में सभी संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं श्रावक समाज की गरिमामयी उपस्थिति रही। महासभा प्रतिनिधि शांतिलाल पारख ने मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 अगस्त - 10अगस्त, 2025

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष, वर्षावास स्थापना एवं तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

जोगेश्वरी, मुंबई

आचार्य श्री भिक्षु का 300वां जन्म दिवस एवं 268वां बोधि दिवस नमस्कार महामंत्र उच्चारण, जप, गीत एवं सामूहिक संगान के साथ प्रारंभ हुआ। महेंद्र लालचंद कोठारी के निवास स्थान पर भिक्षु संध्या का आयोजन किया गया। सभी ने सामूहिक संगान कर पूरे वातावरण को भिक्षुमय बना दिया। आयोजन को सफल बनाने में सभा अध्यक्ष दिनेश सिंघवी, पदाधिकारी, तेयुप, महिला मंडल सहित अनेक धर्मप्रेमी भाई-बहनों की सक्रिय सहभागिता रही।

बालोतरा

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में, तेरापंथ भवन के विशाल हॉल में, श्रद्धालुओं की विशाल उपस्थिति के बीच आचार्य भिक्षु की जन्म-त्रिशताब्दी एवं बोधि दिवस का शुभारंभ मंगलमय कार्यक्रम के साथ हुआ।

साध्वी अणिमाश्री जी ने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए कहा— 'आज के ही दिन रेगिस्तान की सूखी धरती पर एक सदाबहार मंदार खिला था। वह मंदार सत्यनिष्ठा, आगम-निष्ठा, आचार-निष्ठा एवं शुद्ध साध्वाचार के महनीय पल्लवों से सुशोभित था। उसी मंदार की शीतल छाया में तेरापंथ का जन्म हुआ। मरुधर के मंदार—आचार्य भिक्षु—के करकमलों से वपित एवं सिंचित यह तेरापंथ धर्मसंघ आज वटवृक्ष बन चुका है, जो असंख्य मुमुक्षुओं का आधार एवं शरणस्थल बन रहा है। आचार्य भिक्षु का जन्म केवल एक व्यक्ति का जन्म नहीं, अपितु एक क्रांति का जन्म था—आगम-ज्योति, सत्यनिष्ठा और धर्म चेतना का अवतरण था। युगद्रव्य एवं युगसृष्टा आचार्य भिक्षु के जीवन में हजारों गुण समाहित थे। हमारा उद्देश्य केवल उन गुणों के व्याख्याता बनना नहीं, अपितु गुणधर्मी बनकर उन्हें आत्मसात करना है, जिससे जीवन ज्योतिर्मय बन सके। आचार्य भिक्षु की समता और सकारात्मक चिंतन—यदि केवल ये दो गुण भी हमारे जीवन में अवतरित हो जाएं, तो हम आनंदमय जीवन जी सकते हैं। डॉ. साध्वी सुधा प्रभा जी ने कहा—'आचार्य भिक्षु की बोधि जागृत थी। वे ज्ञान-बोधि, दर्शन-बोधि एवं चारित्र-बोधि से संपन्न महापुरुष थे। उनकी बोधि की निष्पत्ति ही हमारा तेरापंथ है। साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर भक्ति स्वरों द्वारा भावाञ्जलि अर्पित की। साध्वी मैत्री प्रभा जी ने अपने भावों की सुंदर प्रस्तुति दी। नम्रता संकलेचा ने मंगल संगान प्रस्तुत किया। मंच संचालन साध्वी कर्णिकाश्री जी ने किया।

बेहाला

आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी के पावन अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद बेहाला द्वारा विशेष भजन संध्या का आयोजन ऑक्सफ़ोर्ड व्यू काम्प्लेक्स, बेहाला में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में भजन गायक पारस बरड़िया द्वारा प्रस्तुत किए गए भक्ति-रस से सराबोर भजनों ने श्रोताओं को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। लगभग 40 श्रद्धालुजन ने भावपूर्वक भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम का सफल संयोजन मेहुल जैन एवं अभिनन्दन बैंगानी ने किया।

इरोड

आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन किया गया। नमस्कार महामंत्र के मंगलाचरण के पश्चात 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी' एवं अन्य गीतों की प्रस्तुति हुई। 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' का जप प्रयोग किया गया। सभा अध्यक्ष जवेरीलाल भंसाली, मंत्री दुलीचंद पारख, उपासक प्रकाश पारख, हीरालाल चौपड़ा, धर्मीचंद बोथरा, राजेश बोथरा, मंजू बाई बोथरा, अमिता बैद आदि ने आचार्य श्री भिक्षु से संबंधित वक्तव्य व गीतिका का संगान किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री दुलीचंद पारख द्वारा व्यक्त किया गया।

सिकंदराबाद

266वें तेरापंथ स्थापना दिवस के पावन अवसर पर भिक्षु संगीत प्रतियोगिता का भव्य आयोजन साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के आयोजकत्व में तेरापंथ भवन, डी.वी. कॉलोनी में संपन्न हुआ।

सभा अध्यक्ष सुशील संचेती ने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं प्रेषित कीं। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री के मंगलपाठ से हुई, जिसके पश्चात साध्वीवृंद द्वारा सुमधुर गीतिका का संगान किया गया। प्रतियोगिता के निर्णायक राकेश कठोतिया एवं हर्षलता दूधोड़िया रहे। प्रतियोगिता में सरला प्रकाश भूतोड़िया ने प्रथम स्थान, पूर्वा सुराणा ने द्वितीय स्थान तथा अमृत पोरवाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन राकेश सुराणा एवं लक्ष्मीपत बैद द्वारा किया गया तथा आभार ज्ञापन सभा मंत्री हेमंत संचेती ने किया।

संगरूर

साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, संगरूर में भिक्षु चेतना वर्ष के प्रथम चरण का त्रिदिवसीय कार्यक्रम श्रद्धा एवं भक्ति के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगल मंत्रोच्चारण एवं त्रिपदी वंदना के साथ हुआ। केन्द्र द्वारा निर्दिष्ट भक्ति गीत 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी...' का सामूहिक संगान किया गया।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा— 'आचार्य भिक्षु का जीवन उदितोदित था। उन्होंने स्वयं प्रकाशमय जीवन जिया और जगत को अध्यात्म का प्रकाश प्रदान किया। आषाढ़ी पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। इस दिन गुरु—ज्ञानदाता—की विशेष रूप से पूजा-अर्चना की जाती है। ऐसा भी कहा जाता है: 'जिसके जीवन में गुरु नहीं, उसका जीवन शुरू नहीं', क्योंकि माता केवल जन्म देती है, परंतु गुरु जीवन देते हैं। आज ही के दिन आचार्य भिक्षु ने भाव दीक्षा ग्रहण कर तेरापंथ सम्प्रदाय की स्थापना की और उसी के फलस्वरूप तेरापंथ धर्मसंघ को आचार्य भिक्षु जैसे महान गुरु प्राप्त हुए। आचार्य भिक्षु में संयम की गरिमा, सत्य की गुरुता एवं तितिक्षा का गौरव था। ऐसे गुरु को पाकर चतुर्विध संघ आध्यात्मिक विकास के शिखर को छू रहा है।'

इस त्रिदिवसीय समारोह के दौरान संगरूर में ॐ भिक्षु जय भिक्षु का अखंड जाप चलता रहा। साध्वी गौतमप्रभा जी ने सुमधुर भक्ति गीत की प्रस्तुति दी, वहीं साध्वी मध्यस्थप्रभा जी ने कविता के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्त किया। स्थानीय श्रावक-श्राविका समाज द्वारा 'तेरापंथ का उत्सव' शीर्षक से एक रोचक नाटक प्रस्तुत किया गया। महिला मंडल की अध्यक्षा सुशीला जैन एवं अन्य भाई-बहनों ने गीत, वक्तव्य एवं अन्य प्रस्तुति के माध्यम से अपने आराध्य के प्रति अभ्यर्थना अर्पित की। कार्यक्रम का सुंदर एवं प्रभावशाली संचालन प्रज्ञा जैन ने किया।

विक्रोली

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष का भव्य शुभारंभ भजन संध्या कार्यक्रम के रूप में तेरापंथ भवन विक्रोली में आयोजित किया गया। इसमें तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल और ज्ञानशाला परिवार के सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र जाप से हुआ।

'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी' गीत का संगान सभा मंत्री भरत कोठारी ने परिषद के साथ किया। 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' का जाप तन्मयता से संपूर्ण परिषद द्वारा किया गया। सुमधुर गायिका दिव्या बोल्या ने 'विघ्न हरण मंगल करण की ढाल' गीत से भजन संध्या का शुभारंभ किया। सभा, तेयुप, महिला मंडल और किशोर मंडल के निवेदन पर विभिन्न भक्ति गीत उत्साहपूर्वक प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का संचालन प्रकाश पोखरना ने किया। महिला मंडल अध्यक्ष पिंकी बाफना, पूर्व अध्यक्ष पुष्पा कोठारी, दिव्या बोल्या एवं उनके परिवारजनों का स्वागत-अभिनंदन किया गया। तेयुप अध्यक्ष मनीष बोहरा ने ॐ भिक्षु जाप एवं संकल्पों की जानकारी देते हुए सभी का आभार प्रकट किया।

बोरीवली, मुंबई

परम पूज्य आचार्य श्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के अवसर पर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा बोरीवली द्वारा शुभारंभ समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी भरत खेतर में...' गीत का संगान किया गया। 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' के सामूहिक जाप ने वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। 'विघ्न हरण मंगल करण' का तीन बार उच्चारण कर त्रिशताब्दी वर्ष के सभी आयोजनों की निर्विघ्न सफलता हेतु मंगल प्रार्थना की गई। ज्ञानशाला के बच्चों ने अपनी सुंदर प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया।

बोरीवली समाज ने इस वर्ष को सार्थक बनाने हेतु 'भिक्षु विचार दर्शन' एवं 'रहस्य भिक्षु के' ग्रंथों का वार्षिक स्वाध्याय करने का संकल्प लिया। सभा अध्यक्ष संगीता सिंघी ने सभी का आत्मीय स्वागत किया और सभा संरक्षक महेन्द्र भंसाली ने आभार प्रकट किया। मंच संचालन गौरव भंसाली ने किया। कार्यक्रम में लगभग 95 श्रद्धालु उपस्थित रहे।

कांदिवली

मुनि कुलदीप कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन कांदिवली में आचार्य भिक्षु का 300वां जन्मदिवस एवं 266वां बोधि दिवस मनाया गया। मुनि कुलदीप कुमार जी ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु सिंह पुरुष थे, जिनका नेतृत्व अध्यात्म का उत्तुंग शिखर था। मुनि मुकुल कुमार जी ने कहा कि भिक्षु विचार दर्शन का अध्ययन नवसंजीवन दे सकता है।

रात्रिकालीन भिक्षु भजन संध्या का आयोजन भारती सेठिया के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर विभिन्न कलाकारों ने आचार्य भिक्षु पर केंद्रित भजनों की सुंदर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन तेयुप अध्यक्ष राजेंद्र दुगड़ ने किया।

राजलदेसर

तेरापंथ सभा भवन में 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने कहा कि आचार्य भिक्षु सत्य के लिए गुरु और पद-प्रतिष्ठा का मोह त्यागने वाले महान आत्मा थे। उन्होंने तत्वज्ञान को आत्मकल्याण और जनकल्याण दोनों के लिए उपयोगी बनाया। साध्वी कुशलप्रज्ञा जी, साध्वी कमलयशा जी, साध्वी चैत्यप्रभा जी और साध्वी स्नेहप्रभा जी ने भी गीतों और वक्तव्यों के माध्यम से श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। रात्रि में धम्म जागरणा का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी इंदुयशा जी ने किया।

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष पर विशेष

भिक्षु को समझो और समझाओ

● साध्वी रचनाश्री ●

भिक्षु को समझो और समझाओ, तेरापंथी होने का गौरव गाओ।

1. वीर भिक्षु ने गण की नींव लगाई, महल मनोहर है सुखदाई।
शीतघर सी शीतलता पाओ।।

2. दान - दया का पाठ पढाया, साध्य- साधन का पथ दिखलाया।
मोक्ष महल की सीढ़ी चढ जाओ।।

3. लौकिक दया को धर्म न मानों, लोकोतर को तुम सब जानो।
आत्मशुद्धि के पथ पर बढते जाओ।।

4. दवा आँख की आँख में डालो, डाल जीभ पर मत दुःख पाओ।
सम्यक् दृष्टिकोण बनाओ।।

5. सम्यक् दर्शन मुक्ति का द्वार है आला, पाता है कोई किस्मत वाला,
तेरापंथ पा भाग्य सराओ।।

6. घी तम्बाकू एक नहीं है, मिश्र का कोई मूल्य नहीं है।
भेद क्षीर-नीर का कर सुख पाओ।।

7. मर्यादा व्यवस्था देने वाले, गण गणिवर का मूल्य बढाने वाले।
गणी आज्ञा में बढते जाओ।।

8. महाश्रमण का नेतृत्व सुहाया, पथ दर्शन करते रहते सवाया।
भिक्षु चेतना वर्ष मनाओ।।

लय - वार्षिक मर्यादोत्सव आया

बाट निहारा म्हें

● साध्वी कुसुमलता ●

आओ भिक्षु भगवान बाट निहारा म्हें,
थाने करां अर्पित तन मन प्राण। बाट निहारा म्हें
हो मन मन्दिर रा देवता म्हारा सफल करो अरमान।।

गृहस्थाश्रम री बातां, सुणतां बीते रातां।
प्रखर प्रतिभा 'पटुता' सरावां हो भिक्षु थारी-2
बचपन में वैराग, धारयो हो थे महाभाग।
दीपां मां की दृढ़ता बतावां हो दीपां-2
हो मान बात रघुनाथ जी री दियो पुत्र रो दान।।

अन्तेवाली बण्या सूत्र सिद्धान्त भण्या
पायो पूरो विश्वास गुरूवर रो। पायो-2
अतः राजनगर, सन्ता सह प्रवर।
भेज्या चौमासो करने सनूरो। हो भेज्या-2
शरावक गण समझावतां थांने मिल गयो तत्व महान।।

सफल बण्यो चौमास, लेकर आया ये आश
जाकर नम्र निवेदन करस्यां हो गुरू-2
श्रावक सारा साचा, आयां ही हां थाचा
साक्षी सिद्धान्त री देस्यां हो-2
हो आकर वातावरण देस्यो उलटो सहयो अपमान।।

आखिर समझ्या नहीं राह पाई नई।
आंतम शुद्धि रो लक्ष्य बणायो हो आतम- 2
नहीं कष्टां रो पार, लाग्या घणां ही लार
आतम बल ने खूब हटायो हो-2
करयो पसीनो खून रो थाने धन्य-धन्य महाप्राण।।

तेरापंथ रो महल, अनकल्पित सहल।
बण गयो सत्य री महिमा गावां हो-2
मर्यादाएं वणी, नींव गहरी घणी।
झंझावतां मैं भय नहीं खावां हो-2
हो आभारी रहस्यां सदा म्हाने मिल्यो पंथ अम्लान।।

नन्दन वन रा रखवाला महाश्रमण आला,
सारो संघ आनन्द मनावै हो-2
शुभाशीष मिले, उपवन फूले फले विस्तार ले।
भिक्षु चेतना वर्ष मनावै-2
शत् शत् वन्दन विनय युत् स्वीकृत हो हे जगत्राण।।

लय - हिवडे.स्यू दूर मति

चमत्कारी भिक्षु नाम

● डा. समणी ज्योतिप्रज्ञा ●

चमत्कारी भिक्षु नाम लगता सुहाना है।
सांवरी सूरत पे दिल ये दीवाना है।।

देव दुर्लभ नंदनवन जग हितकारी है,
तेरापंथ प्रभुपंथ जय जयकारी है।
भक्ति में शक्ति, दुनियां ने पहचाना है।।

त्याग धर्म आज्ञा धर्म तूने बतलाया है,
दया पालो हृदय बदलो मर्म यह समझाया है।
तेरी शिक्षाएं अनुपम सुख का खजाना है।।

एक गुरु एक विधान गण की पहचान है,
मर्यादित विनीत यहां पाता सम्मान है।
सेवा से मिलता मेवा, भिक्षु का फरमान है।।

तीन सौवां बर्थडे आया मंगलकारी है,
हर फूल भिक्षु गाए सजी फुलवारी है।
तेरे ही नाम लिखा श्रद्धा का नजराना है।।

लय- चुप-चुप खड़े हो

भिक्षु का तेरापंथ

● लक्ष्मीपत डूंगरवाल, हैदराबाद ●

जैन धर्म के उपवन में भिक्षु ने, पौधा छोटा-सा एक लगाया,
लगन, मेहनत, कर्मठता से उसको सींचा, संवारा, पेड़ बनाया।
बिना लक्ष्य निकले जन क्रांति को, फिर तेरापंथ का नाम मिला,
विरोधों के कितने तूफान आए, वो अडोल खड़ा, न तनिक हिला।

कभी न मिला आहार तो, कभी रहने को भी जगह नहीं,
परिवर्तन, जन क्रांति में हरदम, आती मुश्किलें — यह बात सही।
किया चिंतन, लेने लगे आतापाना, करना है खुद का कल्याण,
कहा संतों ने — छोड़ो यह सब, करना है आपको जनकल्याण।

लगे समझाने, जन-जन प्रभावित, उनकी बातों में क्या जादू,
मिटी भ्रांतियां, मिटी शंकाएं, अब भिक्षु कहलाए सच्चे साधु।
बसने लगा जन-जन के मानस में, तेरापंथ धर्मसंघ है न्यारा,
एक गुरु के निर्देशन में चलता, संत, सतियां, समाज भी सारा।

त्रिशताब्दी भिक्षु जन्मोत्सव पावन, महासंत को शत-शत वंदन।
भारमल, जयाचार्य, तुलसी, महाप्रज्ञ से, आचार्यों का पावन शासन,
धर्मसंघ मधुबन-सा महक रहा, महाश्रमण का कुशल अनुशासन।
ऐसे पावन तेरापंथ संघ पर करते अपना तन-मन सब अर्पण।

एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

केजीएफ।

साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में केजीएफ स्थित तेरापंथ भवन में एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं प्रज्ञा गीत के संगान से किया गया। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा सरिता बांठिया ने मंगलाचरण में तीर्थंकर स्तुति द्वारा वातावरण को मंगलमय बना दिया। प्रिया बांठिया ने बेंगलुरु से पधारे प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक डालम सेठिया, रेणु कोठारी एवं पूजा गुगलिया का परिचय प्रस्तुत किया।

कार्यशाला का आरंभ रेणु कोठारी एवं पूजा गुगलिया द्वारा प्रेक्षाध्यान गीत के भावपूर्ण संगान से हुआ। इसके पश्चात रेणु कोठारी ने 'ध्यान क्या है, क्यों करें और कैसे करें?' विषय पर सरल एवं प्रभावी भाषा में जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि ध्यान हमारे शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक तनावों को दूर करने में सहायक है तथा इसका आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक आधार भी है। सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान ध्यान द्वारा संभव है। उन्होंने प्रेक्षाध्यान के आठ मुख्य अंगों एवं चार सहायक अंगों की जानकारी दी।

पूजा गुगलिया ने ध्यान की गहराई में उतरने हेतु पाँच उपसम्पदाओं — भावक्रिया, प्रतिक्रिया विरति, मैत्री, मित आहार एवं मित भाषा — को सुंदर तरीके से समझाया।

द्वितीय चरण में श्री महावीर जैन स्कूल के विद्यार्थियों हेतु कार्यशाला ली गई, जिसमें उन्हें दीर्घ श्वास प्रेक्षा एवं महाप्राण ध्वनि का अभ्यास कराया गया और उसके लाभ बताए गए। तृतीय चरण में अनुप्रेक्षा विषयक जानकारी के अंतर्गत अनित्य प्रेक्षा का प्रयोग कराया गया। द्वंदात्मक अस्तित्व अर्थात स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर की अवधारणा को बोर्ड पर चित्र के माध्यम से स्पष्ट किया गया। इसके अतिरिक्त महावीर जैन स्कूल की शिक्षिकाओं को ध्यान की उपयोगिता समझाते हुए समतामय श्वास का प्रयोग भी कराया गया।

डालम सेठिया ने ध्यान-साधना की सफलता हेतु आवश्यक नींद, एकाग्रता एवं प्रयासों की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने ध्यान में विघ्न बनने वाले कारणों को भी विस्तार से समझाया। श्रावक समाज द्वारा कार्यशाला में उत्साहपूर्वक सहभागिता की गई और प्रशिक्षकों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया गया।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा, महिला मंडल, युवक परिषद, महावीर जैन स्कूल के छात्र-छात्राएं एवं शिक्षकगण उपस्थित रहे। अंत में सभा के मंत्री सुशील बांठिया ने सभी उपस्थितजनों एवं आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
04 अगस्त - 10अगस्त, 2025

संबोधि

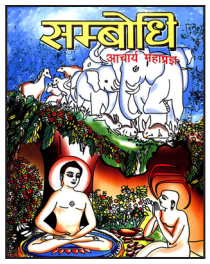

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

'मेकेरियस' नामक साधक से किसी ने पूछा-कृपया बताएं कि मोक्ष का मार्ग क्या है? संत ने कहा- 'यह सामने कब्रिस्तान है। प्रत्येक कब्र पर जाओ और सबको गाली देकर आओ।' उसने सोचा कहां आ गया? इससे मोक्ष का संबंध है क्या? खैर, वह गया और गाली देकर आ गया। संत ने कहा-'एक बार फिर जाओ, और इस बार उसकी स्तुति करके आओ।' वह सब की स्तुति करके चला आया। संत ने पूछा- 'किसी ने कुछ उत्तर दिया? कहा नहीं।' बस यही साधना है। यही मोक्ष का मार्ग है। जीवन में राग-द्वेष, मान-अपमान आदि सभी स्थितियों में सम रहना, भीतर भी कोई उत्तर पैदा न होना, यही है मुक्ति का मार्ग। समाधिशतक में आचार्य पूज्यपाद ने लिखा है-

अपमानादयस्तस्य, विक्षेपो यस्य चेतसः।
नापमानाव्यस्तस्य, न क्षेपो यस्य चेतसः॥

जिसका मन शांत नहीं है, विक्षिप्त है, अपमान आदि उसी को पीड़ित करते हैं। जिस का चित्त शान्त है, उसके लिए अपमान आदि कुछ नहीं हैं।' जितनी मात्रा में राग-द्वेष की क्षीणता है उतनी ही मात्रा में मानसिक आनंद भी परिपूर्ण रूप से अभ्युदित हो जाता है। साधक के चरण पूर्णता की ओर बढ़े।

इन श्लोकों (४-१६) में मानसिक स्वास्थ्य के उपायों का दिग्दर्शन कराया गया है। वे संक्षेप में ये हैं –

(१) मानसिक आवेगों का निराकरण

(२) कायोत्सर्ग का अभ्यास

(३) विषयों की विस्मृति और विरक्ति

(४) संयोग और वियोग में संतुलन

(५) संकल्प-विकल्प से छुटकारा

(६) अज्ञान का निराकरण

(७) हिंसा आदि का त्याग

(८) भोगों की रक्षा का त्याग

(९) राग-द्वेष का विलय

(१०) आत्मार्पणता

(११) आत्मलीनता आदि।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री लिछमांजी (बीदासर) दीक्षा क्रमांक 143

साध्वीश्री की तप में रूचि थी। समय-समय पर उन्होंने कई तप किया। जिसमें बड़े तप का उल्लेख प्राप्त होता है। छोटे तपों का नहीं। उल्लेख इस प्रकार है-17/1, 30/2, 34/1, 40/1

- साभार: शासन समुद्र -

श्रमण महावीर

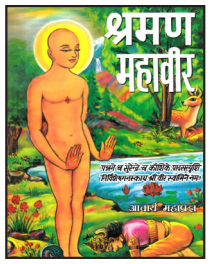

नई स्थापनाएं : नई परम्पराएं

भगवान् ने संयम की साधना के लिए तीन गुप्तियों का निरूपण किया -

१. मनगुप्ति-मन का संवर, केन्द्रित विचार या निर्विचार ।

२. वचनगुप्ति-वचन का संवर, मौन।

३. कायगुप्ति-काय का स्थिरीकरण, शिथिलीकरण, ममत्व-विसर्जन ।

भगवान् ने देखा-अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य आदि संयम-साधना की निष्पत्तियां हैं। उनकी सिद्धि के लिए साधनों का सम्यक् अभ्यास होना चाहिए।

भाषा समिति और वचनगुप्ति के सम्यक् अभ्यास का अर्थ है-जीवन में सत्य की प्रतिष्ठा ।

ईर्या, एषणा, उत्सर्ग, कायगुप्ति और मनगुप्ति के सम्यक् अभ्यास का अर्थ है-जीवन में अहिंसा की प्रतिष्ठा।

कायगुप्ति और मनगुप्ति के सम्यक् अभ्यास का अर्थ है- जीवन में ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा।

कायगुप्ति के सम्यक् अभ्यास का अर्थ है-जीवन में अपरिग्रह की प्रतिष्ठा। भगवान् महावीर ने भगवान् पार्श्व के चतुर्याम धर्म का विस्तार कर त्रयोदशांग धर्म की प्रतिष्ठा की है। जैसे -

१. अहिंसा	८. सम्यक् आहार
२. सत्य	९. सम्यक् प्रयोग
३. अचौर्य	१०. सम्यक् उत्सर्ग
४. ब्रह्मचर्य	११. मनगुप्ति
५. अपरिग्रह	१२. वचनगुप्ति
६. सम्यक् गति	१३. कायगुप्ति
७. सम्यक् भाषा	------

इस विभागात्मक धर्म की स्थापना के दो फलित हुए-

१. भगवान् पार्श्व के श्रमणों में आ रही आन्तरिक शिथिलता पर नियन्त्रण।

२. आन्तरिक शिथिलता के समर्थक तत्त्वों का समाधान ।

भगवान् महावीर ने श्रामणिक, लौकिक और वैदिक-तीनों परम्पराओं के उन आचारों और विचारों का प्रतिवाद किया जो अहिंसा की शाश्वत प्रतिमा का विखंडन कर रहे थे। इस आधार पर भगवान् तीनों परम्पराओं के सुधारक या उद्धारक बन गए।

कुछ विद्वान् मानते हैं कि भगवान् महावीर यज्ञों और कर्मकाण्डों में संशोधन करने के लिए एक क्रान्तिकारी धर्म नेता के रूप में सामने आए और उन्होंने जैन धर्म का प्रवर्तन किया। किन्तु यह मत तथ्यों पर आधृत नहीं है। वास्तविकता यह है कि भगवान् श्रमण-परम्परा के क्षितिज में उदित हुए। उनका प्रकाश परम्परा से मुक्त होकर फैला। उसने सभी परम्पराओं को प्रकाशित किया। भगवान् के सामने वेदों की प्रामाणिकता और ब्राह्मणों की प्रधानता को अस्वीकृत करने का प्रश्न ही नहीं था। वह श्रमण-परम्परा के द्वारा पहले से ही स्वीकृत नहीं थी। श्रमण और वैदिक-ये दोनों महान् भारतीय जाति की स्वतंत्र शाखाएं स्वतंत्र रूप में विकसित हुई थीं। दोनों में भगिनी का सम्बन्ध था, माता और पुत्री का नहीं।

भगवान् महावीर समन्वयवादी थे। वे क्षत्रियों और ब्राह्मणों के बीच चल रही दीर्घकालीन कटुता को समाप्त करना चाहते थे। उन्होंने ब्राह्मणों को प्रधानता दी-एक जाति के रूप में नहीं, किन्तु व्यक्ति के रूप में। जातीय भेद-भाव उन्हें मान्य नहीं था।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

ठाणं

सातवें अध्याय में सात-सात को संख्यावाली स्थितियों का वर्णन है, जैसे-योनिसंग्रह के सात प्रकार, सात संस्थान, सात भयस्थान आदि। इसमें गण से अपक्रमण करने के कारण, छद्मस्थ व केवली की पहचान, मूल गोत्र, सात स्वर (षड्ज, ऋषभ आदि), सात कुलकर आदि का वर्णन है।

आठवें अध्याय में आठ-आठ की संख्यावाली स्थितियों का उल्लेख है, जैसे – आठ कर्म, आठ स्पर्श, आठ गणिसम्पदा आदि। इसमें समितियों, आलोचना देने की अहता, प्रायश्चित्त, वचन विभक्तियां, कृष्णराजि, केवली समुद्घात आदि का वर्णन है।

नवें अध्याय में नौ-नौ की संख्यावाली स्थितियों का उल्लेख है, जैसे-नौ ब्रह्मचर्य-गुप्तियां, नौ सद्भाव पदार्थ, नौ महानिधियां आदि। इसमें विकृतियां, पुण्यबन्ध, पुद्गल आदि का वर्णन है।

दसवें अध्याय में दस-दस की संख्यावाली स्थितियों का उल्लेख है, जैसे-दस प्रकार की लोकस्थिति, दस प्रकार का वैयावृत्त्य, दस प्रकार का प्रायश्चित्त आदि। इसमें शस्त्र, दोष, रुचि, संज्ञा आदि का वर्णन है।

ठाणं प्राकृत भाषा की एक निधि है। इसका ग्रंथ परिमाण ५१७० अनुष्ठप् श्लोक बताया गया है।

महावीर की अहिंसा

'सूयगडो' सूत्र में एक जगह आया है 'लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते' अर्थात् श्रमण भगवान महावीर लोक (दुनिया) में उत्तम हैं। लोकोत्तम कौन हो सकता है? लोकोत्तम वही व्यक्ति हो सकता है, जो अहिंसा का पुजारी होता है। श्रमण महावीर परम अहिंसक थे, इसीलिए सूत्रकार ने उन्हें लोकोत्तम विशेषण से विशिष्ट किया है।

इस अवसर्पिणी काल में चौबीस तीर्थंकर हुए हैं। माना जाता है कि उन तीर्थंकरों के शरीर के दक्षिणांग में एक चिह्न था, जिसे ध्वज भी कहा जाता है। महावीर का ध्वज-सिंह है। यह कैसी विसंगति है। एक तरफ अहिंसा अवतार महावीर और दूसरी तरफ सिंह जो हिंसा का प्रतीक है। यह असमानता कैसे? क्या इसमें भी कोई राज है? हम दूसरे प्रकार से सोचेंगे तो पता चलेगा कि यह बेमेल नहीं, बल्कि बहुत उचित मेल है। सिंह-पौरुष और शौर्य का प्रतीक है। भगवान महावीर की अहिंसा शूरवीरों की अहिंसा है, कायरों की नहीं। पलायनवादी और भीरु व्यक्ति कभी अहिंसक नहीं हो सकता। अहिंसा की आराधना के लिए आवश्यक है- अभय का अभ्यास। सिंह जंगल का राजा होता है, वन्य प्राणियों पर प्रशासन व नियन्त्रण करता है, इसी तरह महावीर की अहिंसा है अपनी इन्द्रियों और मन पर नियंत्रण करना।

महावीर अगर अभय और पराक्रमी नहीं होते तो वे संगमदेव द्वारा उपस्थापित मारणान्तिक उपसर्गों को सहन नहीं कर सकते। वे चण्डकौशिक के डंक की पीड़ा को आनन्द में नहीं परिणमा पाते। जन-साधारण के समक्ष अगर कोई ऐसा उपसर्ग उपस्थित हो जाता है, तो घबड़ा कर भाग जाता है या कोई शक्तिशाली होता है तो उसे मिटाने की कोशिश करता है। महावीर पलायन और प्रतिशोध दोनों से ऊपर उठे हुए थे। महावीर चण्डकौशिक को देखकर घबड़ाये नहीं। सांप ने डंसा तो भी उनके मन में प्रतिशोध के भाव नहीं जागे। वे जानबूझ कर सलक्ष्य सर्प की बांबी के पास गये थे। उन्हें अपनी सुरक्षा का भय नहीं था। महावीर की अहिंसा थी सर्वत्र मैत्री। उनकी मैत्री संकुचित दायरे में आबद्ध नहीं थी। उनके मन में चण्डकौशिक सर्प के प्रति भी उतने ही मैत्री के भाव थे, जितने कि अन्य प्राणियों के प्रति।

श्रमण महावीर अपने नश्वर शरीर की सार-संभाल छोड़ चुके थे। परम अहिंसक वह होता है जो अपने शरीर की मूर्च्छा त्याग देता है, जिसे मृत्यु का भय व्यथित नहीं करता। भगवान महावीर ने इस संकल्प के साथ अभिनिष्क्रमण किया कि मैं अपने पूरे साधनाकाल में शरीर को सार-संभाल न करता हुआ, शरीर पर मूर्च्छा न करता हुआ विचरण करूंगा।

भगवान महावीर अहिंसा की अत्यन्त सूक्ष्मता में गये हैं। आज तो विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया है कि वनस्पति सजीव है, पर महावीर ने आज से अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व ही कह दिया था कि वनस्पति भी सचेतन है वह भी मनुष्य की भांति सुख-दुःख का अनुभव करती है। वनस्पति इतनी सुकोमल होती है कि उसका स्पर्श करने मात्र से उसे पीड़ा होती है। महावीर ने कहा- पूर्ण अहिंसा व्रतधारी व्यक्ति सजीव वनस्पति का स्पर्श भी नहीं कर सकता।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों
का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड
स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan
समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002
पर व्हाट्सअप करें।
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री अमृतमलजी (बीदासर) दीक्षा क्रमांक 386

मुनिश्री ने संयम में रमण करते हुए अपना जीवन तपः साधना में लगाकर 'तवे सूरा अणगारा' की आगमोक्ति को चरितार्थ कर दिया। आपने उपवास से लेकर 21 दिन तक क्रम बद्ध तप किया। समग्र तप तालिका इस प्रकार है उपवास/563, 2/50, 3/16, 4/9, 5/4, 6/1, 7/1, 8/2, 9/1, 10/1, 11/1, 12/1, 13/1, 14/1, 15/1, 16/1, 17/1, 18/1, 19/1, 20/1, 21/1, 30/1। तप के कुल दिन 1021 जिनके 2 वर्ष 10 महिने 1 दिन होता है। मुनिश्री ने आचार्य तुलसी के सन्निध्य में सं 1995 बीदासर में लघुसिंह निष्क्रीडित तप की चौथी परिपाटी प्रारंभ की। क्रमशः 9 दिन तक चढ़कर वापस उतरते समय सात दिनों के चालू तप में तेले के दिन दिवंगत हो गये।

– साभार : शासन समुद्र –

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 अगस्त - 10अगस्त, 2025

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

महामना आचार्यश्री भिक्षु

तेरापथ गणिराज की, जन्म त्रि सदी आगाज,
निज भावों से अर्चना, करें प्रभु की आज।
भिक्षु को जानें सभी, पहचानें-मानें,
रचना से अर्पण करें, अंतर्मन आवाज।।

भिक्षु चेतना वर्ष पर आचार्य श्री भिक्षु के दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने का अनुपम अवसर

- आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी के इस ऐतिहासिक अवसर पर आपको आमंत्रण है – अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से तेरापंथ टाइम्स के विशेष अंकों का हिस्सा बनने का।
- आप अपनी मौलिक रचना हमें प्रेषित कर सकते हैं, जो लेख, गीत, कविता या अन्य किसी साहित्यिक विधा में हो सकती है।

रचना हेतु नियम

1. प्रत्येक रचनाकार से केवल एक रचना ही स्वीकार की जाएगी।
2. रचना का आधार आचार्य भिक्षु एवं उनका दर्शन हो।
3. लेख की अधिकतम सीमा लगभग 750 शब्दों तक सीमित हो।
4. गीत/कविता अधिकतम 5 पद्य अथवा 15 पंक्तियों तक ही सीमित रहें।
5. प्राप्त रचनाओं का प्रकाशन भिक्षु चेतना वर्ष के दौरान कभी भी किया जा सकता है।
6. रचना के प्रकाशन का अंतिम निर्णय तेरापंथ टाइम्स संपादक मंडल का होगा।
7. रचना भेजने की अंतिम दिनांक- 31 अगस्त, 2025

रचना भेजने का माध्यम

ईमेल करें : abtyptt@gmail.com या
वॉट्सएप करें : +91 89059 95002

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

गंगावती, कर्नाटक।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि आकाश कुमार जी एवं सहवर्ती मुनि हितेंद्र कुमार जी का मंगलमय चातुर्मासिक प्रवेश तेरापंथ सभा भवन, गंगावती में भव्य रूप से संपन्न हुआ। मुनि आकाशकुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत देश उगते सूरज का देश है, जहां भौतिकता के साथ-साथ आध्यात्मिकता का सूर्य भी सदैव उदित रहता है। उत्तर कर्नाटक व गंगावती को यह चातुर्मास एक सुनहरा अवसर प्रदान करेगा, जिसमें ज्ञान, ध्यान, तप एवं स्वाध्याय का विकास होता रहेगा।

मुनिश्री ने आराध्य की अभिवंदना करते हुए कहा कि गुरुवर के निर्देशानुसार आज गंगावती में चातुर्मास प्रवेश हो गया है। मुनि हितेंद्र कुमार जी ने सूरत से गंगावती तक की विहार यात्रा की संक्षिप्त जानकारी दी और इस चातुर्मास काल में अधिक से अधिक आध्यात्मिक प्रवृत्तियों को अपनाने की प्रेरणा दी। इससे पूर्व मुनिश्री ने विद्या निकेतन विद्यालय से विहार प्रारंभ किया। भिक्षु चेतना रैली जय घोष के साथ गंगावती के मुख्य मार्गों से होती हुई तेरापंथ भवन पहुँची।

स्वागत एवं अभिनंदन कार्यक्रम सालेचा स्वाध्याय भवन में नमस्कार महामंत्रोच्चार के साथ प्रारंभ हुआ। तेयुप एवं महिला मंडल गंगावती द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। सभाध्यक्ष महावीर बागरेचा ने स्वागत वक्तव्य देते हुए मुनिवृंद के सफलतम चातुर्मास की मंगलकामनाएं प्रेषित कीं।

UKTAS अध्यक्ष राजेंद्र जीरावला, मंत्री रमेश चौपड़ा, वरिष्ठ श्रावक अजितराज सुराणा, महिला मंडल, कन्या मंडल, संघ की बहनों, महावीर पाठशाला के बच्चे, हिरियुर से आए देवराज चौपड़ा, होसपेट महिला मंडल आदि ने वक्तव्य एवं गीतिकाओं के माध्यम से स्वागत एवं अभिवंदना प्रेषित की। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों की भावपूर्ण प्रस्तुति ने सभा को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस अवसर पर तेयुप बल्लारी, महिला मंडल बल्लारी, सिंधनूर एवं कोप्पल का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। UKTAS मंत्री रमेश चौपड़ा ने नवमनोनीत अध्यक्षों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन सुमेर कोचर ने किया।

तप से हो जाते हैं कोटि-कोटि भवों के पाप क्षीण

बायतु।

स्थानीय तेरापंथ भवन में पचरंगी तप का नयनाभिराम कार्यक्रम 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में भव्य रूप से संपन्न हुआ। इस अवसर पर पचरंगी तपस्वियों का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में साध्वीश्री ने कहा कि पचरंगी तप श्रमण संस्कृति की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाने वाला विशिष्ट तप है। जैन धर्म में यह उच्चकोटि की तपस्या मानी जाती है, जो आत्मशुद्धि, कर्म क्षय और मोक्षमार्ग में सहायक होती है। यह तप पांच प्रमुख तपों का संगठित रूप है, जो साधक को विशेष पुण्य, आत्मबल एवं आत्मानुभूति प्रदान करता है। जैसे सोने को अग्नि में तपाकर उसकी अशुद्धियाँ हटाई जाती हैं, वैसे ही तपस्वी तप रूपी अग्नि में तपकर स्वयं को पवित्र करता है, जिससे कोटि-कोटि भवों के पाप क्षीण हो जाते हैं और शरीर कुंदन जैसा बन जाता है।

साध्वी श्री मधुरयशाजी, साध्वी श्वेतप्रभाजी, साध्वी धवलप्रभाजी एवं साध्वी मार्दवयशाजी ने पंचरंगी तप की अनुमोदना में मधुर गीतिकाओं का संगान कर तपस्वियों का उत्साहवर्धन किया। सभा अध्यक्ष राकेश जैन ने कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से जिनशासन की प्रभावना बढ़ती है।

कार्यक्रम का मंगलाचरण रवीना लोढ़ा ने किया। महिला मंडल एवं कन्या मंडल द्वारा सामूहिक गीत की सुंदर प्रस्तुति दी गई। महिला मंडल अध्यक्ष अनिता जैन, अक्षय चौपड़ा, वारिस मेहता, प्रियंका गोलेच्छा, अमृत बालड़, भावना छाजेड़ एवं मंजू कवाड़ सहित अन्य वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी श्वेतप्रभा जी ने किया।

किशोर-युवा प्रशिक्षण शिविर 'उजास' का आयोजन

कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में किशोर-युवा प्रशिक्षण शिविर 'उजास' का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद पूर्वांचल द्वारा भिक्षु विहार, डिविनिटी पेवेलियन में किया गया।

उद्घाटन सत्र में 'नवकार करे भव पार' विषय पर विशाल जनसमुदाय को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि नवकार मंत्र जैन धर्म का सुप्रसिद्ध, असाम्प्रदायिक एवं महामंत्र है। यह संकट मोचक, पथप्रदर्शक, विघ्नविनाशक, आत्म-उन्नायक तथा सिद्धि दायक है। यह मंत्र कामनाओं को मिटाकर आध्यात्मिक चिकित्सा करता है एवं नवग्रहों की शांति में सहायक है।

मुनि परमानंदजी ने कहा कि जिस समाज का युवा स्वस्थ व सशक्त होता है, वह समाज भी स्वस्थ एवं सशक्त होता है। मुनि कुणाल कुमार ने सुमधुर गीतिका का संगान किया।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय धारीवाल ने अपने प्रेरक विचार प्रस्तुत किए। तेयुप सदस्यों द्वारा विजय गीत प्रस्तुत किया गया। स्वागत भाषण तेयुप पूर्वांचल अध्यक्ष राजीव बोथरा ने दिया एवं पूर्वांचल तेरापंथी सभा अध्यक्ष संजय सिंघी ने शिविर हेतु शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर सिद्धितप साधिका मनीषा गोलछा का सम्मान पूर्वांचल सभा द्वारा किया गया। प्रथम सत्र का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। प्रश्नोत्तर सत्र का संचालन विनीत बांठिया एवं प्रयोग बोथरा द्वारा किया गया तथा आभार मंत्री सिद्धार्थ दुधेड़िया ने व्यक्त किया।

संयोजक के रूप में धनपत बड़ड़िया, लोकेश दुगड़ एवं कौशल चौरड़िया की सक्रिय भूमिका रही।

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष, वर्षावास स्थापना एवं तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

कंटालिया

समणी डॉ. मंजुप्रज्ञा जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु का 300वां जन्मदिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल द्वारा 'भिक्षु अष्टकम्' के मंगलाचरण द्वारा हुई। भिक्षु जन्मोत्सव समिति अध्यक्ष गौतम एम सेठिया, वरिष्ठ श्रावक गौतम जुगराज सेठिया, राजेश मरलेचा, प्रकाश गाडिया, महेन्द्र सिंघी, अशोक हिरानी सहित अनेक वक्ताओं ने आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों और जीवन प्रेरणाओं पर प्रकाश डाला। समणी स्वर्णप्रज्ञा जी ने उन्हें प्रकाश, उल्लास, विश्वास और सुवास का प्रतीक बताया। समणी मंजुप्रज्ञा जी ने उन्हें शुक्लधर्मी कहकर गुलाब की सुगंध के रूप में वर्णित किया। कार्यक्रम का संचालन संजय मरलेचा और सुमन मरलेचा ने किया।

केसिंगा

समणी डॉ. ज्योतिप्रज्ञा जी के सान्निध्य में आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के पावन अवसर पर भजन संध्या का आयोजन केसिंगा तेरापंथ भवन में हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ केसिंगा की नवबधुओं द्वारा मंगलाचरण के साथ हुआ। कार्यक्रम में अतिथियों के रूप में केसिंगा सभा अध्यक्ष राम कुमार जैन, महासभा आंचलिक प्रभारी छत्रपाल जैन, महासभा प्रभारी भूपेंद्र जैन, उड़ीसा सभा के पूर्व अध्यक्ष मुकेश जैन एवं महासभा से सुदर्शन जैन की गरिमामयी उपस्थिति रही। धम्म जागरण कार्यक्रम की विशेष शोभा रहे पीतांबर ग्रुप, जो 'सरगम' प्रतियोगिता के सेमीफाइनलिस्ट हैं। उनके सुमधुर गीतिकाओं ने श्रोताओं का मन मोह लिया। समूह में टिटलागढ़ से सुभद्रा जैन, स्नेहा जैन, आकाश जैन, दीपिका जैन, उत्कला से सौरभ जैन, बोर्डा से अरिहंत जैन और बहुमुंडा से तुलसीराम जैन शामिल रहे। केसिंगा से आनंद सागर जैन, भावना जैन और अर्चना जैन ने भी अपनी गीतिकाओं के माध्यम से भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में पश्चिम ओडिशा आचार्य भिक्षु चित्रांकन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था। इस प्रतियोगिता के सीनियर व जूनियर विजेताओं को अतिथियों द्वारा मंच पर पुरस्कृत किया गया।

समणी डॉ. ज्योतिप्रज्ञा जी ने अपने उद्बोधन से सभी को प्रेरणा प्रदान की और प्रतियोगिता में भाग लेने वाले बच्चों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि भिक्षु स्वामी का नाम ही एक चमत्कारी मंत्र है, जिसका जाप करने से निश्चित रूप से कल्याण होता है। समणी जी द्वारा आचार्य श्री भिक्षु पर आधारित एक स्वरचित गीतिका को वीडियो प्रस्तुति के रूप में दिखाया गया।

अंत में केसिंगा सभा अध्यक्ष राम कुमार जैन एवं मंत्री नंदकिशोर जैन द्वारा उपस्थित अतिथियों को साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। साथ ही तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अरुण कुमार जैन, महिला मंडल अध्यक्ष रश्मि जैन एवं मंत्री नीलम जैन द्वारा उपस्थित गायक-गायिकाओं का भी साहित्य भेंट से सम्मान किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेयुप अध्यक्ष अरुण कुमार जैन एवं मंत्री अभिषेक जैन द्वारा किया गया।

साहूकारपेट, चैन्नई

तेरापंथ भवन, साहूकारपेट में आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष शुभारंभ समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का प्रथम दिवस आचार्य भिक्षु जन्मोत्सव के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा महामंत्रोच्चार के पश्चात भिक्षु जप एवं 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी' गीत के साथ हुआ।

साध्वी उदितयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जैन साहित्य में धातु, भाव और दिव्य—इन तीन प्रकार के पुरुषों का उल्लेख मिलता है। धातु निर्मित शारीरिक सौष्ठव और भावों की उच्चता से दिव्य पुरुष का निर्माण होता है। आचार्य भिक्षु ऐसे ही दिव्य पुरुष थे, जिनके प्रबल पुरुषार्थ एवं साहस की अनगिनत घटनाओं का समृद्ध इतिहास उपलब्ध है।

साध्वी संगीतप्रभाजी ने समारोह का काव्यात्मक संचालन करते हुए आचार्य भिक्षु के जीवन के अनेक पहलुओं को स्पर्श किया और कहा कि आचार्य भिक्षु का जन्म केवल तेरापंथ की स्थापना के लिए नहीं, बल्कि आगमिक सत्य और वीतराग धर्म के उद्घाटन हेतु हुआ प्रतीत होता है।

साध्वी भव्ययशाजी एवं साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने आचार्य भिक्षु के जीवन-दर्शन पर अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति अर्पित की। समारोह में तेरापंथ महिला मंडल, चेन्नई द्वारा मंगलाचरण गीतिका की प्रस्तुति दी गई। सभा अध्यक्ष अशोक खतंग एवं महिला मंडल अध्यक्षा लता पारख ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

चेन्नई के विभिन्न उपनगरीय क्षेत्रों से पधारे श्रावक समाज की गरिमामय उपस्थिति, तथा सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, महिला मंडल, टीपीएफ, अणुव्रत समिति एवं विभिन्न ट्रस्ट बोर्डों के पदाधिकारियों, सदस्यों एवं गणमान्य व्यक्तियों की भागीदारी से कार्यक्रम प्रभावक रहा। समारोह में अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने तप, जप, त्याग आदि के संकल्प ग्रहण किए।

किलपाक, चैन्नई

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, किलपाक के तत्वावधान में मुनि मोहजीतकुमारजी के सान्निध्य में आचार्य श्री भिक्षु स्वामी जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के प्रथम चरण पर 'भिक्षु भजनोत्सव' एवं विशाल धम्मजागरण का कार्यक्रम भिक्षु निलयम के महाश्रमणम हॉल में आयोजित किया गया। अर्हत वंदना एवं नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ हुए धम्मजागरण में सभाध्यक्ष अशोक परमार ने संगायक ऋषि दुगड़ एवं श्रावक समाज का स्वागत-अभिनंदन किया। उपस्थित विशाल जनसैलाब को संबोधित करते हुए मुनि मोहजीतकुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु एक कुशल विधिवेत्ता के साथ-साथ एक सहज कवि एवं महान साहित्यकार थे। वे जब तक जिए, ज्योति बनकर जिए। उनके जीवन का हर पृष्ठ पुरुषार्थ की गौरवमयी गाथाओं से भरा पड़ा है। मुनिश्री ने कहा कि स्वर का अभ्यास भी साधना है। प्रत्येक हाथी के सिर पर गजमुक्ता मणि नहीं होती या प्रत्येक वन में चंदन के पेड़ नहीं होते, वैसे ही स्वर का उपहार हर किसी को प्राप्त नहीं होता।

मुनि मोहजीतकुमारजी, मुनि भव्यकुमारजी एवं मुनि जयेशकुमारजी ने अलग-अलग गीतों द्वारा आचार्य भिक्षु की अभिवंदना में अभ्यर्थना प्रस्तुत की। इस भिक्षु भजनोत्सव में सभा के निवेदन पर विशेष रूप से भीलवाड़ा से पधारे संगायक ऋषि दुगड़ ने धर्मसंघ के नए, पुराने और लोकप्रिय गीतों की स्वर लहरियों से समा बाँधे रखा।

इससे पूर्व प्रातःकाल प्रवचन में महामंत्रोच्चार से भिक्षु चेतना वर्ष के प्रथम चरण के शुभारंभ कार्यक्रम में उपस्थित भिक्षु भक्तों को संबोधित करते हुए मुनि मोहजीतकुमारजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का जन्म क्रांति के आवास का, सिद्धांतों के विश्वास का, सहिष्णुता का, फौलादी साहस का, सापेक्षता के समाधान का और साधन-शुद्धि का जन्म था। उन्होंने सम्यक आचार और अनुशासन को महत्व दिया। आचार्य भिक्षु की प्रतिभा, प्रज्ञा और पुरुषार्थ ने बचपन में ही उनके लिए नई संभावनाओं के द्वार खोल दिए।

आचार्य भिक्षु के जन्म एवं बोधि दिवस के संदर्भ में मुनि जयेशकुमारजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का जन्म रूढ़ परंपराओं एवं मिथ्या अवधारणाओं को तोड़कर समाज को नए परिवेश में ढालने के लिए हुआ था। उनकी सोच सम्यक यथार्थ को स्वीकारने के लिए समर्पित थी। संचालन करते हुए मुनि भव्यकुमारजी ने आचार्य भिक्षु के जीवन, दर्शन और बोधि पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्रावक समाज ने जप, तप, त्याग व प्रत्याख्यान स्वीकार कर आर्य भिक्षु को भावांजलि समर्पित की। तेरापंथ सभा मंत्री विजय सुराणा एवं महिला मंडल मंत्री वनिता नाहर ने विचार प्रकट किए। तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं ने 'भिक्षु श्रद्धा स्वर' भावांजलि गीत प्रस्तुत किया।

गांधीनगर, बेंगलुरु

डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी के सान्निध्य में आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी समारोह का शुभारंभ कार्यक्रम तेरापंथ भवन, गांधीनगर, बेंगलुरु में आयोजित हुआ। मुनिश्री ने आचार्य भिक्षु के जीवन की विशेषताओं को रेखांकित करते हुए कहा कि आचार्य श्री भिक्षु तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम आचार्य थे। उन्होंने धर्मसंघ में 'एक आचार्य, एक विचार और एक आचार' का सूत्र दिया। भिक्षु स्वामी ऐसे महापुरुष थे, जिनके जीवन की प्रत्येक घटना और प्रसंग सत्य के प्रति समर्पण, सहिष्णुता और उदारता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्य भिक्षु के जीवन में समता का भाव विशेष रूप से विद्यमान था। वे जन उद्धारक जैन आचार्य थे। उनका जीवन मानव को सद्गुणों की प्रेरणा देने वाला रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार महामंत्र से हुआ। मुनि आदित्य कुमारजी ने 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी' गीत के माध्यम से श्रद्धा अर्पित की। सूरत से पधारे सुरेश सुराणा एवं तेरापंथ महिला मंडल द्वारा भक्ति गीत प्रस्तुत किया गया।

मुनिश्री द्वारा 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' का जाप करवाया गया। सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, तेरापंथ महासभा से प्रकाश लोढ़ा, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष प्रसन्न धोका, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा लक्ष्मी बोहरा, मंत्री विजेता रायसोनी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित बाबेल एवं रेणु कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किए। सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

मुनिश्री ने 266वें तेरापंथ स्थापना दिवस के सदंर्भ में कहा कि जैन धर्म में तेरापंथ समुदाय की अलग ही पहचान है, इसके मानवता परक कार्य दिन प्रतिदिन बढ रहे हैं। आचार्य भिक्षु इसके संस्थापक रहे हैं। आचार्य भिक्षु ने तेले की तपस्या के साथ इसकी स्थापना राजस्थान के केलवा ग्राम अंधेरी ओरी में की थी। उस समय की धार्मिक और सामाजिक विषमताओं को दूर करने का प्रयास किया था।

आज के दिन हम गुरु को नमन करें, गुरु की स्मृति करें, गुरु का गुणगान करें और गुरु के साहित्य का पठन करने का संकल्प करें। मुनिश्री ने अनेक श्रावक-श्राविकाओं को तेले की तपस्या का प्रत्याख्यान करवाया। 'नचिकेता' मुनि आदित्य कुमार जी ने गीतिका का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों एवं सभा पूर्व अध्यक्ष बहादुर सेठिया ने गीतिका की प्रस्तुति दी। सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने आगामी कार्यक्रम की सूचना दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन महिला मंडल मंत्री विजेता रायसोनी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 अगस्त - 10अगस्त, 2025

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष, वर्षावास स्थापना एवं तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

जलगांव

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष शुभारंभ कार्यक्रम तेरापंथ सभा जलगांव एवं महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में अणुव्रत भवन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र के उच्चारण से हुई। 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी' गीत का संगान जितेन्द्र छाजेड़ ने किया।

ॐ भिक्षु – जय भिक्षु जाप सवा घंटे तक चला। सभा अध्यक्ष पवन सामसुखा, महिला मंडल अध्यक्ष विनीता समदड़िया सहित विभिन्न पदाधिकारियों ने अपने भाव प्रकट किए। रात्रिकालीन धम्म जागरण का आयोजन भी किया गया।

जसोल

पुराना ओसवाल भवन, जसोल में साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी का कार्यक्रम बड़े उल्लास के साथ मनाया गया। साध्वी रतिप्रभा जी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि आज हमारे सौभाग्योदय का महत्वपूर्ण दिवस है। आज के दिन एक आलोकपुंज ने अवतार लिया, जिसकी आभा से, जिसकी ऊर्जा से तेरापंथ ही नहीं, जिनशासन का कोना-कोना महक उठा। आचार्य भिक्षु के मन में न कोई महत्वाकांक्षा थी, न कोई आकांक्षा, शुद्धाचार का पालन ही उनका एकमात्र लक्ष्य था। भगवान महावीर की वाणी ही उनके जीवन का मार्गदर्शन थी। शुद्ध धर्म की प्रतिष्ठा के लिए वे जीवन भर संघर्ष करते रहे, साहस, श्रम और दृढ़ निष्ठा के साथ आगे बढ़ते रहे।

साध्वी कलाप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु हमारे प्रथम आराध्य हैं। वे आत्मार्थी पुरुष थे। सत्य की पगडंडियों पर निरंतर चलते रहे और तूफानी झंझावातों के बीच भी अडिग रहे। उनका लक्ष्य महान था, चिंतन महान था और कार्य भी महान था। साध्वी मनोज्ञयशा जी ने कार्यक्रम का शुभारंभ 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी' गीत के साथ किया। कन्या मंडल द्वारा 'क्या तुमने भिक्षु को देखा' गीतिका के माध्यम से मंगलाचरण किया गया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी, महासभा सदस्य गौतमचंद सालेचा, माणकचंद संखलेचा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष महावीर सालेचा, निवर्तमान सभा अध्यक्ष उषभराज तातेड़, प्रवीण भंसाली, पुष्पादेवी बुरड़, जिज्ञाशा डोसी आदि ने गीत, भाषण और मुक्तक के माध्यम से आराध्य के प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। रात्रि में धम्म जागरण का आयोजन किया गया। चातुर्मासिक चौदस पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि चातुर्मास का समय एक स्वर्णिम काल है। भवितात्माओं के मन में धर्म और अध्यात्म के प्रति सहज उल्लास देखते ही बनता है। हम सब हर क्षण की सार्थकता प्राप्त करें, जीवन का योगक्षेम मनाते हुए आगे से आगे बढ़ते रहें। साध्वी कलाप्रभा जी ने कहा कि जसोल श्रद्धा का गढ़ है, भावना और भक्ति से भरा हुआ क्षेत्र है। साध्वी पावनयशा जी के प्रयास से भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी का जप अनुष्ठान दिनोदिन आगे बढ़ रहा है। साध्वीश्री ने इस अवसर पर तप, जप एवं स्वाध्याय की विशेष प्रेरणा दी। कार्यक्रम में हाजरी का वाचन करते हुए कई उदाहरणों के द्वारा तेरापंथ संघ को मर्यादित संघ बताया गया तथा यह प्रेरणा दी गई कि हम आगम एवं गुरु आज्ञा में आस्थावान रहें। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा चातुर्मासिक प्रेरणा की रोचक प्रस्तुति दी गई।

तेरापंथ स्थापना दिवस पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु धर्मक्रान्ति के अग्रदूत थे। उन्होंने शिथिलाचार विरुद्ध धर्मक्रान्ति की। सत्य की राहों पर चलना और सत्य पाना ही उनका परम् ध्येय था। उनकी आत्मा के हर स्पन्दन में भगवान महावीर की शाश्वत वाणी अभिगुंजित थी। साध्वी कलाप्रभा जी ने कहा कि स्वामी जी हमारे श्रद्धा के केन्द्र है, आस्था के धाम हैं, उनका नाम ही मंत्र है। उन्होंने जो दिया, जो किया इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हो गया। आचार्य भिक्षु ने किसी भी प्रलोभन पर सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं किया। सायंकाल धम्म जागरण के आयोजन में तेरापंथ सभा, युवक परिषद, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल, ज्ञानशाला आदि के द्वारा समूहस्वर के साथ विशेष प्रस्तुति दी। साथ में तेरापन्थ प्रबोध का संगान भी किया गया। त्रिदिवसीय कार्यक्रम में तीन दिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक ॐ भिक्षु जय भिक्षु का जप चला। भिक्षु त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष में लगभग 500 भाई-बहनों ने प्रतिदिन 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' की माला फेरने का संकल्प किया है। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ सुरेश डोसी के सुमधुर गीत से हुआ। संपतराज चौपड़ा, मोतीलाल जीरावला आदि ने भी अपने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का सफल संचालन साध्वी मनोज्ञयशा जी ने किया।

तंडियारपेट, चैन्नई

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, उत्तर चेन्नई तंडियारपेट के तत्वावधान में आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष भिक्षु चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में वरिष्ठ उपासिका राजश्री डागा की गरिमामयी उपस्थिति में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत उपासिका राजश्री डागा एवं उपासिका सुप्रिया सामसूखा द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। तत्पश्चात 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी' गीत का भावपूर्ण संगान हुआ। उसके पश्चात 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' का जाप कराया गया।

उत्तर चेन्नई सभा के अध्यक्ष इंदरचंद डूंगरवाल ने स्वागत उद्बोधन प्रस्तुत किया। स्थानीय बहनों द्वारा 'भिक्षु अष्टकम' का संगान किया गया। पिंकी गेलड़ा ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। उपासिका राजश्री डागा ने अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य भिक्षु अलौकिक पुरुष थे। उन्होंने एक बालक के रूप में कंटालिया में जन्म लिया और अनासक्त चेतना के धनी रहे। उन्होंने संयम का पथ स्वीकार किया। जब उन्होंने कथनी और करनी में अंतर पाया, तब उन्होंने आगम स्वाध्याय किया। तेरापंथ की स्थापना में श्रावक एवं श्राविकाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

आचार्य भिक्षु के 300वें जन्मदिवस वर्ष का शुभारंभ हो चुका है। इस वर्ष हमें आचार्य भिक्षु के साहित्य का अधिक से अधिक स्वाध्याय करने का संकल्प लेना है तथा भावी पीढ़ी को उनके सिद्धांतों और विचारों से अवगत कराना है। धन्यवाद ज्ञापन सभा के उपाध्यक्ष दिलीप गेलड़ा ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन शांता गेलड़ा ने किया।

कोलकाता

मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य में आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के शुभारंभ समारोह का आयोजन जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा (कलकत्ता-पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा भिक्षु विहार, डिविनिटी पवेलियन में भव्य रूप से संपन्न हुआ। इस अवसर पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा— 'आचार्य भिक्षु सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति थे। वे संयम और तप में पराक्रम करने वाले महर्षि थे। वे मरुधर के मंदार, अलबेले योगी तथा बाल्यकाल से ही प्रतिभासंपन्न और कुशाग्र बुद्धि के धनी थे। उनकी वाणी, कबीर की भांति, सामाजिक कुरुतियों पर प्रहार करने वाली थी। उनकी आगम-निष्ठा अत्यंत गहन और दृढ़ थी। उनकी धर्मक्रांति तेरापंथ के रूप में विख्यात हुई। उन्होंने जीवन भर सत्य की खातिर संघर्ष और कष्टों को सहन किया।'

मुनि परमानंदजी ने कहा— 'भिक्षु स्वामी साधना के शलाका पुरुष थे।' मुनि कुणालकुमारजी ने इस अवसर पर एक भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथी सभा, तेयुप एवं टी.पी.एफ. सहित सभी सहयोगी संस्थाओं के सदस्यों द्वारा सामूहिक रूप से भिक्षु अष्टकम के संगान से किया गया।

इस अवसर पर कलकत्ता सभा अध्यक्ष अजय भंसाली एवं पूर्वांचल सभा अध्यक्ष संजय सिंघी ने श्रद्धासिक्त विचारों की सारगर्भित अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम के दौरान अहमदाबाद से प्रसारित आचार्य श्री महाश्रमणजी के लाइव प्रवचन को भी श्रद्धापूर्वक श्रवण किया गया।

तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर मुनि जिनेश कुमारजी ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा-तेरापंथ के संस्थापक आचार्य भिक्षु का ध्येय संगठन बनाना नहीं था, किन्तु वे अध्यात्म क्रान्ति के पथ पर बढ़ते गए, कारवां स्वतः बनता गया और तेरापंथ जैसे सुदृढ़ धर्मसंघ का निर्माण हो गया। विक्रम संवत 1817 आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन भाव दीक्षा के साथ राजस्थान के केलवा में तेरापंथ की स्थापना हुई। आचार्यश्री भिक्षु चंचलता की चौखट पर चोट करने वाले थे। शिथिलता के स्वप्न को संयम के शीतल छींटों से तिरोहित कर देते थे। वे असत्य के खिलाफ आवाज उठाते थे और सत्य के सबल संपोषक व समर्थक थे। आचार्य भिक्षु साहित्यकार, तत्ववेत्ता, विधिवेत्ता व महान दार्शनिक थे। इस अवसर पर मुनि परमानन्दजी ने कहा-तेरापंथ की स्थापना के पीछे त्याग और बलिदानों की अमर कहानी है। मुनि कुणाल कुमारजी ने गीतिका का संगान किया। समारोह के प्रारम्भ में महिला मंडल ने मंगलाचरण किया। पूर्वांचल तेरापंथी सभा अध्यक्ष संजय सिंघी, महिला मंडल अध्यक्षा बबीता तातेड़ ने भी अपने विचार रखे। आभार ज्ञापन सभा मंत्री पंकज डोसी तथा समारोह का कुशल संचालन मुनि परमानन्दजी ने किया।

राजराजेश्वरी नगर

आचार्य श्री भिक्षु के 300वें जन्म वर्ष के शुभारंभ के अवसर पर साध्वी पुण्ययशाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, राजराजेश्वरी नगर में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आचार्य भिक्षु के जीवन के मार्मिक प्रसंगों का उल्लेख करते हुए साध्वी पुण्ययशाजी ने कहा— 'विचक्षण बुद्धि, अडोल धैर्य एवं असीम आचारनिष्ठा का नाम है – आचार्य भिक्षु। वे एक विलक्षण और उच्चकोटि के संत थे। उनकी उत्कृष्टता का मूल कारण था आचार और विचार विषयक विशुद्धि की पूर्ण जागरूकता। तेरापंथ केवल उनका पोर्टफोलियो नहीं था, वह उनके प्राणतत्त्व के समान था। आचार्य भिक्षु के अशेष बलिदान ने तेरापंथ को युगों-युगों तक अमर बना दिया।'

त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष में साध्वीश्री की प्रेरणा से प्रवचन के दौरान भाई-बहनों ने 300 सामायिक कर इस आयोजन को रचनात्मकता प्रदान की। साध्वीश्री के सान्निध्य में तेरह कोटि जाप के साथ त्रिशताब्दी वर्ष का शुभारंभ हुआ। सामूहिक रूप से सवा लाख जाप अनुष्ठान सम्पन्न हुआ, जिसमें 'श्री भिक्षु नमो नमः' का उच्चारण हुआ। इस अवसर पर विविध प्रकार के त्याग-प्रत्याख्यान भी करवाए गए। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा महामंत्र के उच्चारण से हुआ। साध्वी विनीतयशाजी, साध्वी वर्धमानयशाजी एवं साध्वी बोधिप्रभाजी ने 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी' गीतिका के माध्यम से मंगलाचरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर अहमदाबाद में विराजित आचार्य श्री महाश्रमणजी के मंगल उद्बोधन का सीधा प्रसारण भी किया गया, जिसे उपस्थित श्रावक समाज ने श्रद्धा सहित श्रवण किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने सभी का स्वागत किया। युवक परिषद द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। सामायिक ग्रुप की बहनों द्वारा 'भिक्षु अष्टकम' का सामूहिक संगान किया गया। आचार्य भिक्षु की अभिनव सम्पदाओं को तेरापंथ महिला मंडल द्वारा एक रोचक प्रस्तुति के रूप में प्रस्तुत किया गया। मंच का कुशल संचालन साध्वी वर्धमानयशाजी ने किया।

तेरापंथ का संविधान शुद्ध साधुत्व और चरित्र आराधना का आधार है

गंगाशहर।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक परम पूज्य आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में गंगाशहर में आयोजित समारोह के दूसरे दिन तेरापंथ भवन में आयोजित प्रवचन में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने संविधान विषय पर अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना वि. सं. 1817 की आषाढ़ी पूर्णिमा को हुई थी। जैसे-जैसे संघ का विस्तार हुआ, आचार्य भिक्षु ने इसकी मर्यादा और अनुशासन को सुरक्षित रखने हेतु वि. सं. 1832 में एक सुव्यवस्थित संविधान की रचना की।

मुनिश्री ने कहा कि यह संविधान मात्र व्यवस्थाओं का संकलन नहीं, बल्कि शुद्ध साधुत्व और चरित्र आराधना का आधार है। इसमें न केवल साधु-साध्वियों के जीवन को विनययुक्त मार्ग पर स्थापित करने की कोशिश की गई, बल्कि धर्म में फैली कुरीतियों और विकृतियों को दूर करने का क्रांतिकारी प्रयास भी निहित है।

मुनिश्री ने समाज में बढ़ती असहिष्णुता और विनयहीनता पर चिंता जताते हुए कहा कि बड़ों के प्रति आदर, सहनशीलता और कर्तव्यबोध का भाव प्रत्येक घर में जागृत होना चाहिए। उन्होंने पिता-पुत्र, सास-बहू जैसे पारिवारिक रिश्तों में स्नेह, वात्सल्य और सम्मान को पुनः स्थापित करने की प्रेरणा दी। साथ ही, उपस्थित श्रद्धालुओं को आत्म-संयम, परिवार-संरक्षा और संघ-सुरक्षा के लिए जागरूक रहने का आह्वान भी किया। इस अवसर पर मुनिश्री ने श्रावक-श्राविकाओं की तपस्याओं के पचखान भी करवाए।

इसी क्रम में सायंकाल तेरापंथी सभा गंगाशहर द्वारा भव्य भिक्षु भजन संध्या का आयोजन किया गया, जो सेवा केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञा जी एवं साध्वी लब्धियशा जी के सान्निध्य में संपन्न हुई। साध्वी विशदप्रज्ञा जी ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु का जन्म कंटालिया जैसे कठोर वातावरण में हुआ। उन्होंने सत्य की साधना करते हुए कांटों के बीच गुलाब की भांति धर्म संघ की स्थापना की। उन्होंने आगे कहा कि यह तेरापंथ धर्मसंघ का सौभाग्य है कि आचार्य भिक्षु का जन्म, अभिनिष्क्रमण और देवलोक गमन सभी मंगलवार को हुए और यह त्रिशताब्दी जन्मोत्सव भी मंगलवार को ही मनाया गया। भजन संध्या में साध्वी मननयशा जी, साध्वी कौशलप्रभा जी एवं अनेक भजनकारों ने भावपूर्ण भजनों से श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रेम बोथरा ने किया।

समारोह के तृतीय दिवस पर मुनि कमलकुमार जी ने तेरापंथ का उद्भव विषय पर अपना उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि तेरापंथ का प्रारंभ वि.स.1817 आषाढी पुर्णिमा से होता है। उसी दिन आचार्य भिक्षु ने नये सिरे से व्रत ग्रहण किए। इस प्रकार उनकी भाव दीक्षा के साथ ही तेरापंथ का सहज प्रवर्तन हुआ।

मुनिश्री ने कहा कि महापुरुषों का अन्तःकरण परमार्थ से परिपूर्ण होता है। वह जैसा अपना हित चाहते हैं, वैसे ही दूसरों का भी। आचार्य भिक्षु को जो श्रेयमार्ग मिला, उसे उन्होंने दूसरों को भी दिखाना चाहा। मुनिश्री ने श्रावकों को प्रेरणा देते हुए कहा कि जैन धर्म महान है, तेरापंथ महान है, कहने से, शब्दों के उचारण से महान नही होता है, प्रत्येक व्यक्ति को इसका अध्ययन करना चाहिए। जिससे श्रद्धा-विश्वास के साथ जुड़ा जा सके। इस अवसर पर मुनि श्रेयांसकुमार जी ने गीत का संगान किया। उपासक राजेन्द्र सेठिया ने आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों एवं तेरापंथ दर्शन पर अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम में अनेकों श्रावक-श्राविकाओं ने गीतिका, कविताओं, एवं वक्तव्यों से तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना के सम्बन्ध में भावों की अभिव्यक्ति दी। तीनों ही दिन का रात्रिकालीन कार्यक्रम सेवाकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञा जी, साध्वी लब्धियशा जी के सान्निध्य में शान्तिनिकेतन में आयोजित हुए।

संक्षिप्त खबर

भक्तामर जप अनुष्ठान

हैदराबाद। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्या साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में भक्तामर जप अनुष्ठान का आयोजन अत्यंत श्रद्धा एवं सुनियोजित ढंग से संपन्न हुआ। इस जप अनुष्ठान में लगभग 250 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लेकर आध्यात्मिक ऊर्जा से स्वयं को अभिभूत किया। साध्वीश्री ने भक्तामर जप अनुष्ठान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इसका नियमित अभ्यास जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। उन्होंने संपूर्ण भक्तामर स्तोत्र की लयबद्ध एक माला का सामूहिक उच्चारण करवाया, साथ ही छठे, इक्कीसवें एवं अंतिम श्लोक का मंत्र एवं ऋद्धियों सहित 9-9 बार सामूहिक जप करवाया। उन्होंने बताया कि छठा श्लोक बुद्धि विकास हेतु, इक्कीसवां श्लोक विजय प्राप्ति के लिए तथा अंतिम श्लोक सर्वसिद्धिदायक माना जाता है। सभा के मंत्री हेमंत संचेती ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए समस्त श्रावक समाज के प्रति आभार प्रकट किया।

वाटर प्यूरिफाई मशीन भेंट

शिवकाशी। अभातेमम के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल शिवकाशी द्वारा 'एक बूँद एक सागर' जल संरक्षण अभियान के अंतर्गत श्री एन एम मेहता जैन पब्लिक स्कूल में वाटर प्यूरिफाई मशीन भेंट की गई। इसका उद्घाटन पूर्व अध्यक्ष सज्जन डागा एवं वर्तमान अध्यक्ष सुशीला सेठिया द्वारा संपन्न हुआ। स्कूल की कॉरस्पॉडेंट श्रेया मेहता एवं प्रिंसिपल सहित समस्त स्टाफ ने तेरापंथ महिला मंडल का आभार व्यक्त किया।

तप समाचार

गंगाशहर। उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में महावीर फलोदिया, सम्पत सांड, शारदा देवी मरोटी ने 11 दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

बायतु। 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में जितेन्द्र मेहता ने नौ उपवास की तपस्या की।

दायित्व बोध ग्रहण समारोह आयोजित

राजाजीनगर।

तेरापंथ युवक परिषद, राजाजीनगर का दायित्व बोध ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि से तेरापंथ सभा भवन, गांधीनगर में मुनि डॉ. पुलकितकुमार जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से किया गया। जैन संस्कारक सतीश पोरवाड़ ने विविध मंगल मंत्रोच्चार के साथ विधि को सम्पन्न करवाया।

समारोह के दूसरे सत्र में तेयुप राजाजीनगर द्वारा संचालित भिक्षु श्रद्धा स्वर के सदस्यों ने विजय गीत का संगान किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप के अभूतपूर्व अध्यक्ष, युवा गौरव विमल कटारिया द्वारा किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश चोरड़िया ने सभी का स्वागत करते हुए नवमनोनीत अध्यक्ष जितेश दक को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इसके पश्चात जितेश दक ने अपनी टीम की घोषणा की और सभी नवमनोनीत पदाधिकारियों—उपाध्यक्ष प्रथम जयंतीलाल गांधी, उपाध्यक्ष द्वितीय सुनील मेहता, मंत्री अनिमेष चौधरी, सहमंत्री प्रथम रवि चौधरी, सहमंत्री द्वितीय राहुल चावत, संगठन मंत्री पंकज बोहरा, कोषाध्यक्ष कुनाल गन्ना, प्रचार प्रसार एवं मीडिया प्रभारी जितेन्द्र कोठारी तथा कार्यसमिति सदस्यों को शपथ दिलाई।

मुनि डॉ. पुलकितकुमार जी ने उद्बोधन प्रदान करते हुए अध्यक्षीय दायित्वों के निर्वहन, संगठन के प्रति मर्यादा पालन एवं गुरु इंगित के पदचिह्नों पर चलते हुए कार्य करने की प्रेरणा दी। साथ ही नवमनोनीत अध्यक्ष को उज्ज्वल कार्यकाल हेतु मंगलकामनाएं भी प्रेषित कीं। अध्यक्ष जितेश दक ने अपने वक्तव्य में संगठन को सशक्त बनाने एवं अभातेयुप के त्रि-आयामी सूत्र—सेवा, संस्कार, संगठन—के सभी आयामों को संपादित करने का लक्ष्य रखा और सभी से एकजुट होकर संघ के लिए कार्य करने का आह्वान किया।

इस अवसर पर राजाजीनगर सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, महिला मंडल कार्यवाहक अध्यक्षा उषा चौधरी, शाखा प्रभारी दिनेश मरोठी, अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत, अभातेयुप अभूतपूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया आदि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए परिषद को नई ऊँचाइयों पर ले जाने की प्रेरणा दी और शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। कार्यक्रम में संस्थापक अध्यक्ष सुनील बाफना, सीपीएस राष्ट्रीय सलाहकार सतीश पोरवाड़, तेयुप गांधीनगर अध्यक्ष प्रसन धोका, अभातेयुप परिवार तथा श्रावक समाज की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन जयंतीलाल गांधी ने कुशलतापूर्वक किया।

धम्म जागरण के साथ की आर्य भिक्षु की स्तुति

साक्री, खान्देश।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि आलोककुमार जी के सान्निध्य में आचार्य श्री भिक्षु के 300वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में भजन संध्या का आयोजन तेरापंथ भवन, महाश्रमण सभागार, साक्री (खान्देश) में किया गया। मुनिश्री ने नवकार महामंत्र के संगान के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। तेरापंथ महिला मंडल ने भिक्षु स्वामी पर आधारित गीत प्रस्तुत करते हुए अपने भाव व्यक्त किए। साथ ही, उपासिका बहन टीना पगारिया ने आचार्य भिक्षु के जीवन-दर्शन पर वक्तव्य प्रस्तुत किया। तेरापंथ युवक परिषद ने आचार्य भिक्षु के प्रति भक्ति भाव से ओतप्रोत गीतों का संगान किया। भाई पियूष कर्णावट, भूषण कांकरिया और सिद्धि कांकरिया ने अपनी सुमधुर प्रस्तुतियों से समस्त श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। सम्पूर्ण सभागार भिक्षुमय वातावरण से गूंज उठा।

भजन संध्या के इस कार्यक्रम में मुनि आलोककुमार जी ने 'ॐ भिक्षु', 'विघ्न हरण मंगल करण' आदि जप करवाए और धर्मसंघ व आचार्य श्री भिक्षु के ऐतिहासिक क्षणों की भावपूर्ण चर्चा की। मुनि हिमकुमार जी ने भी आचार्य भिक्षु के जीवन-दर्शन पर आधारित वक्तव्य और गीत प्रस्तुत किए।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 अगस्त - 10अगस्त, 2025

11 प्रतिमा की तपस्या नहीं है कोई साधारण बात

जयपुर।

शासन गौरव बहुश्रुत परिषद की सदस्य साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में अणुविभा केंद्र के महाप्रज्ञ सभागार में 11 प्रतिमाधारी विशिष्ट श्रावक डालचंद कोठारी का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष शांतिलाल गोलछा, युवक परिषद अध्यक्ष रवि छाजेड़ सहित वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं की गरिमामयी उपस्थिति रही।

तेरापंथ महिला मंडल, शहर की अध्यक्ष कौशल्या जैन ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि 11 प्रतिमा धारी श्रावक डालचंद कोठारी साध्वीश्री के सान्निध्य में अणुविभा पधारे हैं और हमें सहज ही उनका अभिनंदन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। डालचंद कोठारी की सुपुत्री ने अपने वक्तव्य में उनके संयममय जीवन और साधना पथ के बारे में जानकारी दी। स्वयं डालचंद कोठारी ने भी अपनी तप-साधना की यात्रा साझा करते हुए बताया कि किस प्रकार दृढ़ मनोबल और गुरु कृपा के सहारे उन्होंने बीते 5-6 वर्षों में आने वाली अच्छी-बुरी सभी परिस्थितियों का सामना करते हुए इस साधना को पूर्ण किया।

सभा अध्यक्ष शांतिलाल गोलछा, युवक परिषद अध्यक्ष संजय छाजेड़ एवं वरिष्ठ श्रावक राजकुमार बरडिया ने भी अपने भावपूर्ण विचार प्रकट किए। साध्वी कनकश्री जी ने अपने संबोधन में कहा कि 11 प्रतिमा की तपस्या कोई साधारण बात नहीं है — यह एक विशिष्ट साधक ही कर सकता है। आज तक दो या तीन ही ऐसे श्रावक हुए हैं जिन्होंने इस स्तर की साधना की है।

उन्होंने यह भी बताया कि डालचंद कोठारी ने संयम मार्ग को अपनाते हुए दीक्षा लेने की भावना प्रकट की है। हम सभी मनोकामना करते हैं कि आचार्यश्री उन्हें यथाशीघ्र अनुमति प्रदान करें, जिससे वे अपने इस दिव्य संकल्प को पूर्ण कर सकें। अंत में तेरापंथ महिला मंडल, शहर शाखा सी-स्कीम, तेरापंथ सभा एवं युवक परिषद द्वारा कोठारी का साहित्य भेंट कर सम्मानपूर्वक अभिनंदन किया गया।

शपथ ग्रहण समारोह

अमराईवाड़ी ओढव । तेरापंथ महिला मंडल अमराईवाड़ी ओढव के सत्र 2025–27 की नवमनोनीत अध्यक्ष संजू चिपड़, मंत्री कीर्ति डांगी एवं उनकी कार्यकारिणी टीम का शपथ ग्रहण समारोह अमराईवाड़ी तेरापंथ भवन में जैन संस्कार विधि के अनुसार आयोजित किया गया। समारोह की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। मंडल बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। संस्कारक दिनेश टुकलिया ने विधि में निर्दिष्ट मंत्रोच्चार के साथ शपथ ग्रहण की प्रक्रिया को पूर्ण करवाया। स्वागत भाषण एवं शुभकामनाएं निवर्तमान अध्यक्ष लक्ष्मी सिसोदिया ने प्रस्तुत कीं। उन्होंने नई टीम को बधाई देते हुए उनके सफल कार्यकाल की कामना की। उपासिका एवं ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका संगीता सिंघवी, निवर्तमान मंत्री वंदना पगारिया ने भी नई कार्यकारिणी को मंगलकामनाएं प्रेषित कीं।

पीलीबंगा। तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, अणुव्रत समिति एवं कन्या मंडल, पीलीबंगा के नवनियुक्त अध्यक्षों, संयोजिकाओं तथा उनकी कार्यकारिणी टीम का शपथ ग्रहण समारोह जैन भवन, पीलीबंगा में डॉ. मुनि विनोद कुमार जी के सान्निध्य में श्रद्धा, गरिमा एवं विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ। सम्पूर्ण शपथ विधि जैन संस्कार विधि के अनुसार संपन्न कराई गई। पुष्पा नाहटा ने महिला मंडल की अध्यक्ष, अंजन बोथरा ने तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष एवं प्रीति डाकलिया ने कन्या मंडल की संयोजिका को शपथ दिलाई। तेरापंथ महिला मंडल की नवमनोनीत अध्यक्ष सुलोचना बांठिया एवं युवक परिषद अध्यक्ष हेमंत बांठिया ने अपनी-अपनी कार्यकारिणी टीमों को शपथ दिलाई। अणुव्रत समिति, पीलीबंगा के संरक्षक विजयराज दूगड़ ने अध्यक्ष सुभाष जैन को अणुव्रत आचार संहिता की शपथ दिलाई। जैन संस्कारक राजकुमार छाजेड़ एवं सतीश पुगलिया ने मंत्रोच्चारण द्वारा विधिपूर्वक शपथ ग्रहण सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर समाज के अनेक गणमान्यजन, पदाधिकारीगण, वरिष्ठजन एवं युवावर्ग की गरिमामयी उपस्थिति रही। नवगठित टीमों ने संगठन के उद्देश्यों के प्रति पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण भाव से कार्य करने का संकल्प लिया।

Magic of Mantras अनुष्ठान सफलतापूर्वक हुआ संपन्न

हैदराबाद।

तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद द्वारा आयोजित 'मंत्रों का जादू – अनुष्ठान : तांत्रिक समस्याओं का समाधान' कार्यक्रम तेरापंथ भवन, डी.वी. कॉलोनी में साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को जैन मंत्रों की महिमा तथा तांत्रिक समस्याओं और उनके समाधानों से परिचित कराना था निर्धारित समयानुसार अनुष्ठान का विधिवत शुभारंभ हुआ, जहाँ नीली रोशनी से निर्मित पिरामिड के भीतर विशेष बैठने की व्यवस्था की गई थी, जिसने एक अद्वितीय आध्यात्मिक वातावरण निर्मित किया।

साध्वी मेरुप्रभा जी ने सुमधुर गीत का संगान कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। साध्वी मयंकप्रभा जी ने अनुष्ठान से संबंधित मुख्य जानकारियाँ साझा कीं, जिससे श्रद्धालुओं को प्रक्रिया को समझने में सहायता मिली।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने जैन मंत्रों की महत्ता बताते हुए कहा कि जैन मंत्र अत्यंत प्रभावशाली होते हैं। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि इन मंत्रों की साधना व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से विकसित करने के उद्देश्य से की जानी चाहिए, क्योंकि मंत्रों का प्रभाव शारीरिक, मानसिक, भौतिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर सकारात्मक पड़ता है।

साध्वीश्री ने यह भी बताया कि मंत्र अनुष्ठान से जादू-टोना, बुरी नज़र आदि दुष्प्रभावों से भी समाधान प्राप्त होते हैं। उन्होंने तेयुप हैदराबाद के कार्यकर्ताओं के श्रम की अनुमोदना करते हुए समाज को प्रेरणा दी कि हम केवल कमियाँ निकालने का दृष्टिकोण न अपनाएं, बल्कि कार्यकर्ताओं के अच्छे कार्यों की सराहना भी करें। उन्होंने तेयुप हैदराबाद की टीम का उत्साहवर्धन किया।

कार्यक्रम का मंच संचालन आदेश पिरोदिया ने कुशलतापूर्वक किया। संयोजक शुभम बम्बोली एवं आदेश पिरोदिया पिछले कई दिनों से इस कार्यक्रम की तैयारियों में सक्रिय रूप से जुटे हुए थे। कार्यक्रम की शुरुआत में परिषद् की ओर से मंत्री अनिल दूगड़ ने सभी उपस्थितजनों का हार्दिक स्वागत किया। सहमंत्री जिनेंद्र सेठिया ने आयोजन से जुड़ी अनेक महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वहन किया।

अंत में, संगठन मंत्री जिनेंद्र बैद ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कार्यकर्ताओं के श्रम की अनुमोदना की तथा सभी पधारे हुए श्रद्धालुओं का आभार ज्ञापन किया। अरिहंत गुजरानी, चेतन मरलेचा, आलोक नाहटा आदि अनेक कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम की सफलता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जैन विद्या परीक्षा 2024 के प्रमाण-पत्र वितरित

हैदराबाद।

सन् 2024 के जैन विद्या परीक्षा के प्रमाण-पत्रों का वितरण साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा सिकंदराबाद के तत्वावधान में तेरापंथ भवन, डी.वी. कॉलोनी में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। तत्पश्चात जैन विद्या गीतिका का सुमधुर संगान सह-केन्द्र व्यवस्थापिकाओं द्वारा प्रस्तुत किया गया।

सभा अध्यक्ष ने शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए सभी से जैन विद्या परीक्षा से जुड़ने का आग्रह किया। तेलंगाना एवं आंध्र प्रदेश के जैन विद्या परीक्षा प्रभारी पदमचंद दुगड़ ने संकाय की गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी और बताया कि इस वर्ष 15 परीक्षार्थियों ने विज्ञ प्राप्त किया तथा 7 परीक्षार्थियों को वरीयता प्राप्त हुई है। उन्होंने आगामी वर्ष के लिए हैदराबाद केंद्र को 500 फार्म भरवाने का लक्ष्य घोषित करते हुए सभी से सहयोग का अनुरोध किया।

केंद्र व्यवस्थापिका हेमा मालू ने जैन विद्या की संपूर्ण जानकारी देते हुए समाज के प्रत्येक सदस्य से इस उपक्रम से जुड़ने एवं फार्म भरने का आह्वान किया। साध्वी दक्षप्रभाजी एवं मेरूप्रभाजी ने गीतिका के माध्यम से तथा साध्वी मयंकप्रभाजी ने अपने वक्तव्य द्वारा सभी को जैन विद्या परीक्षा देने के लिए प्रेरित किया।

साध्वी डॉ. गवेषणा श्रीजी ने अपने उद्बोधन में 'पढमं नाणं तओ दया' का उल्लेख करते हुए ज्ञानार्जन के लिए जैन विद्या परीक्षा से जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि ज्ञान प्राप्त करने का पहला चरण स्वाध्याय, दूसरा ध्यान और तीसरा तप है, जिनके माध्यम से मोक्ष मार्ग की ओर बढ़ा जा सकता है। कार्यक्रम में 9 बहनों द्वारा जैन विद्या परीक्षा पर आधारित रोचक प्रस्तुति दी गई। इसके पश्चात सभा द्वारा 15 विज्ञ धारकों, 7 वरीयता प्राप्त परीक्षार्थियों तथा हैदराबाद स्तर पर भाग 1 से 8 तक के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले कुल 30 परीक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं सुंदर मोमेंटो द्वारा सम्मानित किया गया। शेष सभी परीक्षार्थियों को भी प्रमाण-पत्र एवं पंकज ऋषभ मालू द्वारा प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

आंचलिक संयोजिका संगीता गोलछा, केंद्र व्यवस्थापिका हेमा मालू एवं सभी सह-केन्द्र व्यवस्थापिकाओं ने टीमवर्क के माध्यम से प्रमाण-पत्र वितरण की अत्यंत सुंदर व्यवस्था की।

कार्यक्रम के अंत में प्रेम संचेती ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन यशोदा कोठारी ने सुव्यवस्थित रूप से किया।

पैंसठिया छन्द अनुष्ठान का हुआ आयोजन

केसिंगा।

तेरापंथ भवन में समणी डॉ. ज्योतिप्रज्ञा जी के सान्निध्य में पैंसठिया छन्द अनुष्ठान का कार्यक्रम भव्य रूप में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 40 जोड़े सम्मिलित थे। समणी डॉ ज्योति प्रज्ञा जी ने इस अनुष्ठान के लाभ के बारे में सबको मार्गदर्शन दिया। समणीजी ने आगे बताया कि इसे पैंसठिया इसके लिए कहते हैं कि इस यंत्र को दाएं बाएं कही से भी गिनती करें तो इसका योग 65 ही होगा। तीर्थंकरों की स्तुति से सम्यक्त्व की विशुद्धि होती है और इस यंत्र को पास में रखने से दुःख दारिद्र का नाश होता है और सभी मनोवांछित कार्य पूरे होते हैं। केसिंगा तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेयुप के सहयोग से कार्यक्रम सफलतम रहा।

सलाह देने से अधिक आवश्यक है साथ रहकर कार्य करना

बालोतरा।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् बालोतरा का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। तत्पश्चात तेयुप स्वर-संगम द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। शाखा प्रभारी कैलाश तातेड़ ने श्रावक निष्ठा पत्र का सामूहिक वाचन करवाया। निवर्तमान अध्यक्ष रौनक श्रीमाल ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष संदीप रेहड़ को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इसके पश्चात अध्यक्ष संदीप रेहड़ ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यसमिति सदस्यों को शपथ दिलाई।

कार्यक्रम के दौरान निवर्तमान अध्यक्ष, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष ने नव मनोनीत पदाधिकारियों को प्रतीक चिह्न भेंट कर औपचारिक रूप से दायित्व हस्तांतरण किया।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज तेरापंथ युवक परिषद् का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न हुआ है।

तेयुप हमारे धर्मसंघ में युवाओं का संगठन है, जो जोश, उत्साह और उमंग का प्रतीक है। युवा जिस क्षेत्र में कदम बढ़ाता है, वहाँ कीर्तिमानों की श्रृंखला स्थापित हो जाती है।

तेयुप धर्मसंघ की गौरवशाली संस्था है, जिसके सदस्य संघ की आन-बान-शान बढ़ाने के लिए कटिबद्ध हैं। तेयुप साथी अपने समय, श्रम और शक्ति का नियोजन कर धर्मसंघ की सेवा में समर्पित हैं।

उन्होंने आगे कहा कि आज बालोतरा तेयुप में दायित्व हस्तांतरण हो रहा है। निवर्तमान अध्यक्ष रौनक श्रीमाल द्वारा वर्तमान अध्यक्ष संदीप रेहड़ को जिम्मेदारी सौंपी जा रही है।

मैं चाहती हूँ कि वर्तमान कार्यकारिणी पूर्व सदस्यों के अनुभवों को साथ लेकर और अधिक सक्रियता से कार्य करे। चातुर्मास में आपकी जागरूकता परिलक्षित हो तथा अधिकतम युवाओं को संगठन से जोड़ने का लक्ष्य रखा जाए। अध्यक्ष, पदाधिकारी एवं कार्यसमिति के सदस्यों के भीतर दायित्व-बोध की चेतना बनी रहे, और उनका कार्यकाल आने वाली टीम के लिए प्रेरणा स्रोत बने।

साध्वीश्री ने यह भी कहा कि सलाह देने से अधिक आवश्यक है साथ रहकर कार्य करना और तेयुप को निरंतर आगे बढ़ाना।

इस अवसर पर निवर्तमान अध्यक्ष रौनक श्रीमाल, वर्तमान अध्यक्ष संदीप रेहड़ एवं राष्ट्रीय प्रभारी कैलाश तातेड़ ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संस्कारक प्रकाश श्रीमाल एवं ललित जीरावला द्वारा जैन संस्कार विधि के अनुसार शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न करवाया गया।

मंच संचालन पूर्व मंत्री हंसमुख जीरावला ने किया एवं आभार ज्ञापन वर्तमान मंत्री राजेंद्र वेदमुथा ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

मानव जीवन में...

दामाद विनीत चौधरी ने भी एक सराहनीय प्रस्तुति दी, जिसके पश्चात उपस्थित समस्त दामादों ने सामूहिक रूप से गीत का संगान किया।

'बेटी तेरापंथ की' की राष्ट्रीय संयोजिका कुमुद कच्छारा तथा जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने भी सम्मेलन के संदर्भ में अपने विचार साझा किए।

आचार्यश्री ने सम्मेलन में उपस्थित समस्त बेटियों, दामादों, दोहिता-दोहितियों एवं समधियों को संबोधित करते हुए कहा— 'जीवन के संस्कार एक महान संपदा होते हैं, जिनका प्रभाव इस जीवन तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि आगामी जीवनों तक बना रहता है।

अच्छे संस्कारों से युक्त व्यक्ति समाज और परिवार, दोनों के लिए कल्याणकारी होता है। बेटियां दो घरों की प्रतिनिधि होती हैं—पीहर और ससुराल। यदि वे संस्कारी और ज्ञानवती हों, तो दहलीज के दीपक के समान दोनों घरों को आलोकित कर सकती हैं। महासभा द्वारा आयोजित यह सम्मेलन धार्मिक चेतना को सुदृढ़ करने, पारस्परिक जुड़ाव को प्रगाढ़ करने और आत्मिक परिष्कार हेतु एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करता है।'

आचार्य प्रवर ने आगे कहा— 'यह केवल लौकिक संबंधों का आयोजन नहीं है, अपितु आध्यात्मिक ऊर्जा से जुड़ने का भी एक अनूठा माध्यम है। इस पावन वातावरण में सम्मिलित छोटे बच्चों को भी श्रेष्ठ संस्कार एवं जीवन प्रेरणा प्राप्त हो सकती है।'

कार्यक्रम के समापन पर आचार्यश्री ने उपस्थित बालकों को अपनी जिज्ञासाएं प्रस्तुत करने की आज्ञा प्रदान की। बालकों ने उत्साह और सरलता के साथ अपनी जिज्ञासाएं प्रकट कीं, जिन्हें आचार्यश्री ने गहनता एवं सहजता से समाहित किया।

साधना, संयम और...

सिर्फ साधु ही नहीं, यदि कोई श्रावक भी तपस्वी और धर्मपरायण है, तो देवगति का आयुष्य बंध होने पर वह भी वैमानिक देवगति को प्राप्त करता है। यदि कोई मिथ्यात्वी व्यक्ति तपस्या करता है और उन परिणामों में उसका आयुष्य बंध होता है, तो वह मनुष्य भी देवगति में जन्म ले सकता है। परंतु सम्यक्त्व अवस्था में नरक, तिर्यंच, स्त्रीवेद, नपुंसक, भवनपति, व्यंतर और ज्योतिष्क—इन सात गतियों में आयुष्य का बंध नहीं होता।

यदि सम्यक्त्व चला गया और मिथ्यात्व आ गया, तो मनुष्य का पतन होकर वह दूषित गति को प्राप्त कर सकता है।

'आयारो' में कहा गया है कि अगली गति दुर्गति न हो और उत्तम गति प्राप्त हो—इसके लिए साधना, संयम और तप का जीवन में होना आवश्यक है। तभी नरक, तिर्यंच आदि गतियों से बचा जा सकता है।

यदि किसी व्यक्ति का जन्म अच्छे कुल में होता है, तो उसे धर्म की प्राप्ति में सुविधा मिल सकती है और उसके संस्कार भी श्रेष्ठ हो सकते हैं। हमें सज्जन व्यक्तियों और साधु-संतों के संपर्क में रहना चाहिए। श्रमण निर्ग्रंथों की पर्युपासना से श्रवण का लाभ होता है और श्रवण से ज्ञान प्राप्त होता है।

ज्ञान से हेय और उपादेय का विवेक उत्पन्न होता है, जिससे त्याग की चेतना जाग्रत होती है, और वह व्यक्ति आगे बढ़ते-बढ़ते मोक्ष को प्राप्त करने वाला भी बन सकता है।

बोलती किताब

कैसे सोचें ?

मनुष्य मन वाला प्राणी है, इसलिए वह सोचता है । सोचना मन का काम है । पशु भी मन वाला प्राणी है, पर उसका नाड़ी-संस्थान विकसित नहीं होता, इसलिए उसमें सोचने की क्षमता भी विकसित नहीं होती । मनुष्य का नाड़ी-संस्थान विकसित होता है, इसलिए वह सोचने की उच्चतम भूमिका तक जा सकता है । शरीर और मन का परस्पर गहरा संबंध है । शरीर से मन प्रभावित होता है और मन से शरीर प्रभावित होता है । मन शरीर को अधिक प्रभावित करता है । इस पारस्परिक प्रभाव के अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि मनुष्य का चिन्तन विधायक या रचनात्मक होता है तब शरीर भी स्वस्थ रहता है । ।

दो प्रकार के व्यक्ति चिन्तनशून्य होते हैं—प्रत्यक्षज्ञानी और अज्ञानी । यह कैसी विचित्र तुलना ! बहुत बार ऐसी विचित्र तुलनाएं होती हैं । मान और अपमान में सम रहने वाले दो ही व्यक्ति होते हैं । या तो वीतराग, इनमें सम रह सकता है या मूर्ख इनमें सम रह सकता है । कहां वीतराग और कहां मूर्ख ! वीतराग व्यक्ति में असमानता के बीज नष्ट हो जाते हैं । समभाव उसका प्रखर हो जाता है । मूर्ख में मान और अपमान का विवेक कर सकने की क्षमता ही नहीं होती । वह दोनों में पृथक्करण नहीं कर सकता, इसलिए वह सम रहता है । कैसी विचित्र तुलना ! कैसा विचित्र संयोग !

अचेतन में न क्रोध होता है, न अहंकार होता है और न छलना/प्रवंचना होती है । आदमी आदमी को ठग लेता है, चेतन चेतन को ठग लेता है । पर कभी जड़ ने किसी चेतन को ठगा हो, ऐसा देखने-सुनने में नहीं आया । ये सारी प्रवंचनाएं, सारी ठगाइयां आदमी ने ही पैदा की हैं और आदमी ही इन्हें करता चला जा रहा है । दूसरे शब्दों में, चेतन ने पैदा की है और चेतन ही करता चला जा रहा है । इसका निष्कर्ष है कि सारी बुराइयों को चेतन ही टिकाए हुए है । अचेतन में कोई बुराई नहीं होती । अचेतन में तो जो होता है वह होता है । न अच्छाई होती है और न बुराई होती है ।

इस दुनिया में कुछ परिवर्तनीय है और कुछ अपरिवर्तनीय । जो अपरिवर्तनीय है, जो ध्रौव्यांश है उसे नहीं बदला जा सकता । किन्तु जो पर्याय हैं, उन्हें बदला जा सकता है । कोई भी पर्याय अपरिवर्तनीय नहीं होता । क्रोध की अवस्था एक पर्याय है, मान और अहंकार की अवस्था एक पर्याय है, लोभ की अवस्था एक पर्याय है, प्रियता और अप्रियता की अवस्था एक पर्याय है । ऐसे हजारों पर्याय हैं । वे कभी अपरिवर्तनीय नहीं होते । उन्हें बदला जा सकता है । सारे संबंध और सभी कर्म पर्याय हैं । उन्हें बदला जा सकता है । मूल तत्त्व को नहीं बदला जा सकता । मूल तत्त्व दो ही हैं—चेतन और अचेतन । ये नहीं बदले जा सकते । चेतन अचेतन में या अचेतन चेतन में नहीं बदला जा सकता । पर्याय बदले जा सकते हैं जब जब यह तथ्य जान लिया जाता है तब सारे संबंध-विजातीय भाव टूटने लग जाते हैं । उस स्थिति में यह स्पष्ट अनुभव होने लगता है कि ध्यान विसंबंध की प्रक्रिया है । ध्यान करने वाले व्यक्ति की चेतना संबंधातीत होने लग जाती है । यह व्यवहार में कुछ अटपटी-सी बात लगती है । पर यह होता है । उस व्यक्ति का सारा रस बदल जाता है, मर जाता है । जब वह परम रस में मग्न हो जाता है, तब ये नीचे के रस तुच्छ हो जाते हैं, रसहीन हो जाते हैं ।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

रक्षा कवच होते हैं मंत्र

विजयनगर।

मंत्र हमारे रक्षा कवच होते हैं इससे शारीरिक मानसिक भावनात्मक सदृढ़ता आती है। यह विचार साध्वी संयमलता जी ने 'ॐ ऋषभाय हनि हनि स्वाहाः' मंत्र के सवा करोड़ जप अनुष्ठान की पूर्णाहुति पर तेरापंथ भवन विजयनगर में कहे।

साध्वीश्री जी ने कहा यह मंत्र शारीरिक स्वास्थ्य का प्रदाता है। यदि कोई तप नहीं कर सकते तो जप करके अपनी श्रद्धा को घनीभूत करें। साध्वीश्री ने कहा कि हमने सवा करोड़ जप का लक्ष्य लेकर अनुष्ठान का प्रारंभ किया था किंतु आज पूर्णाहुति तक लगभग डेढ़ करोड़ जाप का अनुष्ठान हो चुका है। साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा यह मंत्र हमारे प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ को समर्पित है।

मंत्र के द्वारा सकारात्मक ऊर्जा का वलय निर्मित होता है, उसके प्रभाव से हमारे आभामंडल के रंग परिवर्तित होते हैं। सभा अध्यक्ष मंगल कोचर ने विचार रखे।

कार्यक्रम में सभी संस्थाओं के पदाधिकारीगण के साथ श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 अगस्त - 10अगस्त, 2025

कषाय को छोड़ने वाला बन सकता है अभय : आचार्य श्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
22 जुलाई, 2025

'वीर भिक्षु समवसरण' में उपस्थित श्रद्धालुओं को 'आयारो' आगम के माध्यम से शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि आदमी के भीतर भय की वृत्ति भी होती है। आदमी डरता है, किंतु कुछ मनुष्य ऐसे भी होते हैं जो पूर्णतया अभय हो जाते हैं। आगम में उनके लिए अकुतोभय शब्द आता है। जिन्हें किसी से कोई भय न हो, जिन्हें किसी भी दिशा से भय न हो—वही अकुतोभय अर्थात् अभय कहलाता है।

प्रश्न उठ सकता है कि अकुतोभय कैसे बना जा सकता है? आगम में इसका समाधान दिया गया है—लोक को जानकर। यहाँ 'लोक' का अर्थ कषाय के रूप में किया गया है। कषाय अर्थात्—क्रोध, अहंकार, माया और लोभ। इन्हें जानकर, समझकर, और छोड़ने का प्रयास किया जाए, तो व्यक्ति अभय बन सकता है।

ज्ञान की प्राप्ति एक अच्छी बात है, किंतु ज्ञान के साथ-साथ उसकी क्रियान्विति भी हो, तो वह और भी श्रेष्ठ होती है। ज्ञान होता है, तो आचरण भी होना चाहिए। जो जीव-अजीव को नहीं जानता, वह भला संयम कैसे कर सकता है? शास्त्र में बताया गया है कि यदि मनुष्य कषायों को जान ले और फिर उन्हें छोड़ दे, तो वह अकुतोभय अर्थात् अभय बन सकता है।

मनुष्य को दुःख का भय लगता है। जब कषाय ही नहीं रहेंगे, तो दुःख भी नहीं रहेगा; और जब दुःख नहीं रहेगा, तब व्यक्ति अभय बन सकता है।

साधना का अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है—कषायों पर विजय प्राप्त करना। कभी-कभी व्यक्ति गुस्से में आकर कुछ गलत बोल देता है या कोई अनुचित कार्य कर बैठता है। गुस्सा शांत होने पर उसे भय होता है कि अब आगे क्या होगा? यह भय, गुस्से रूपी कषाय के कारण उत्पन्न होता है। इसी प्रकार, अहंकार, छल-कपट और लोभ के कारण भी भय उत्पन्न होता है।

मनुष्य कषायों के वशीभूत होकर जो गलत कार्य करता है, उसके आगामी परिणामों को लेकर वह भयभीत हो जाता है। अतः मनुष्य को अपने जीवन में कषायों को पतला अथवा पूर्ण रूप से क्षय करने का प्रयास करना चाहिए।

जीव अपने दुःख स्वयं उत्पन्न करता है। दूसरे लोग भले ही दुःख देने में निमित्त बन जाएं, परंतु दुःख का मूल कारण व्यक्ति के स्वयं द्वारा किए गए कर्म ही होते हैं। इसलिए यदि कषायों को दूर किया जा सके, तो वैसे कर्म नहीं बंधेंगे, भय नहीं रहेगा और व्यक्ति अकुतोभय—अभय बन जाएगा।

प्रवचन के उपरांत आचार्यश्री ने 'तेरापंथ प्रबोध' का संगान किया तथा उसका सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत कर श्रद्धालुजनों को भावविभोर किया। इस अवसर पर अहमदाबाद में चल रही पचरंगी तपस्या के अंतर्गत तपस्वियों ने अपनी-अपनी तपस्याओं का प्रत्याख्यान किया। कार्यक्रम के दौरान शांतिलाल चोरड़िया ने आचार्यश्री की सन्निधि में भावपूर्ण गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अहिंसा के प्रति बनी रहे सजगता : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
23 जुलाई, 2025

कोबा स्थित प्रेक्षा विश्व भारती परिसर में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम के चौथे अध्ययन के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा कि अहिंसा व्यापक धर्म है। विभिन्न सम्प्रदाय दुनिया में हैं, जो धर्म से जुड़े हुए हैं, उनमें से कोई भी सम्प्रदाय ऐसा नहीं होगा जो अहिंसा को पूर्णतया नकारता हो। जैन धर्म में सूक्ष्मता से भी अहिंसा का निरूपण किया गया है। आयारो आगम में बताया गया है कि अतीत में जितने अर्हत हुए हैं, वर्तमान में हैं और भविष्य में होने वाले हैं, वे ऐसा कहते हैं कि सभी प्राण, जीव, भूत और सत्त्व हन्तव्य नहीं हैं। उनका हनन नहीं करना चाहिए, परिताप नहीं करना चाहिए, प्राण नियोजन नहीं करना चाहिए। सभी जीवों के प्रति अहिंसा की चेतना होनी चाहिए।

साधु-साध्वियां तो अहिंसा के पुजारी रहें, आचरण में अहिंसा हो। जो साधु तन, मन और वचन से किसी को दुःख नहीं देते, उनके दर्शन मात्र से पाप झड़ जाते हैं। साधु को पूर्ण जागरूकता के साथ अहिंसा का पालन करने का प्रयास करना चाहिए। साधु को बैठते समय रजोहरण व प्रमार्जनी से स्थान को पोंछकर, साफ कर बैठना चाहिए। चलते समय भी ईर्या समिति का पालन करना चाहिए, चक्षुरीन्द्रिय का उपयोग करना चाहिए। प्रतिलेखन की प्रक्रिया भी अहिंसा के प्रति जागरूकता के लिए होती है। कभी प्रतिलेखन नहीं हुआ हो तो उसकी आलोयणा लेनी चाहिए। गोचरी भी पूर्ण सजगता के साथ करनी चाहिए, काई आदि पर पांव न पड़े। सहज में जो मिल जाए, उसी पदार्थ की गोचरी करने का प्रयास होना चाहिए। साधुचर्या की अहिंसा बहुत सूक्ष्म है, इसके प्रति साधु की सचेष्टता बनी रहे, यह काम्य है।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने संघ की सेवा भावना पर प्रकाश डालते हुए अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कीं। साध्वी निर्वाणश्रीजी ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी भावाभिव्यक्ति दी। चतुर्दशी के अवसर पर हाजरी वाचन के अंतर्गत

उपस्थित चारित्रात्माओं ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया।

आचार्यश्री ने उपासक श्रेणी के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा—'परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में प्रारंभ हुई यह श्रेणी आज उत्तरोत्तर सक्षमता की ओर अग्रसर है। जिन क्षेत्रों में साधु-साध्वियों की उपस्थिति नहीं हो पाती, वहाँ यह श्रेणी संथारा एवं अन्य आध्यात्मिक क्रियाओं में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती है। पर्युषण पर्व जैसे अवसरों पर भी इसका विशेष महत्व है।'

आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि उपासक वर्ग को संयम-साधना, ज्ञान-विकास, प्रेक्षाध्यान और धर्म-प्रचार के कार्यों में निरंतर सक्रिय रहना चाहिए। यही इस श्रेणी की सार्थकता और उपयोगिता है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

धर्मक्रांति के बीजों का प्रस्फुटन

वि. सं. १८१५ की घटना। राजनगर (मेवाड़) के श्रावकों के मन में 'आधाकर्मी (स्थानक) का मुनि सेवन करते हैं।' इत्यादि प्रश्न उठे। उन्होंने वन्दना छोड़ दी। आचार्य रुघनाथजी ने संत भीखणजी को उन्हें समझाने के लिए भेजा। उन्होंने श्रावकों के प्रश्न सुने, वे विचारणीय थे। पर अपने गुरु का वचन मान्य रखने के लिए उन्होंने श्रावकों को जैसे-तैसे समझा दिया।

श्रावक बोले– हमारी शंका निर्मूल नहीं हुई पर आप वैरागी हैं, बुद्धिमान हैं, आप पर हमें भरोसा है, इसलिए हम आपके प्रति नत हैं।

कोई नियति की प्रेरणा– अकस्मात् संत भीखणजी के शरीर में भयंकर शीत ज्वर उतर आया। भयंकर थी उसकी वेदना। उस समय आचार्य भिक्षु ने सोचा– मैंने उन श्रावकों को, जो सच्चे थे, झूठा ठहराया। यदि इस समय मौत आ जाए तो कैसी गति होगी?

आचार्य भिक्षु ने संकल्प किया–यदि ज्वर का प्रकोप शांत हो जाए तो मैं सही-सही प्ररूपणा करूंगा, फिर चाहे कोई राजी हो या नाराज। ज्वर तत्काल उतर गया। यह था एक महान् भविष्य का संकेत।

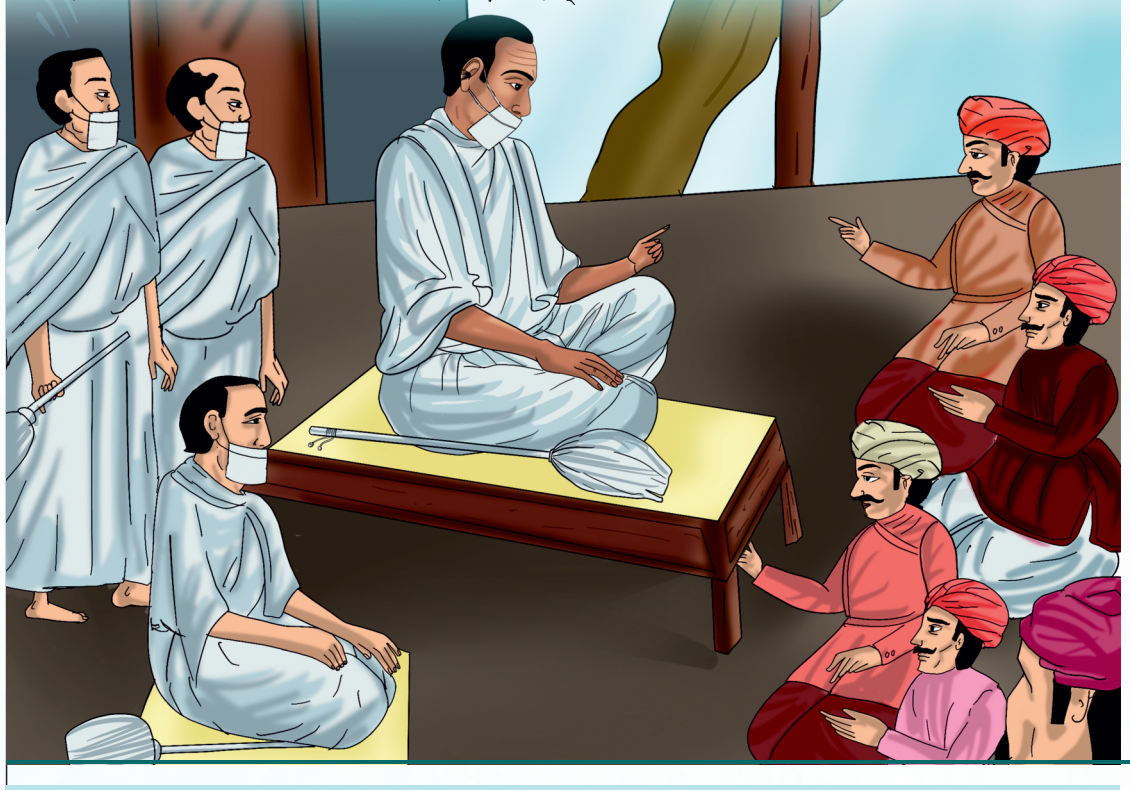

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

जप क्यों?

क्या कोई अक्षर इतना शक्तिशाली हो सकता है कि कोई भी कार्य कर सकता है? अथवा पराशक्तियों को भी प्रभावित कर सके? अथवा कृत कर्म का छेदन कर सके? शिष्य की इस जिज्ञासा पर गुरु ने समाधान दिया - हां! ऐसा संभव है। शास्त्र वचन है कि 'अमंत्रमक्षरं नास्ति' कोई भी अक्षर ऐसा नहीं है जो मंत्र न हो। परंतु 'योजकस्तत्र दुर्लभः' बिना सही योजक के वह मंत्र बन नहीं पा सकता। संस्कृत साहित्य में 'जप' कि बड़ी सुंदर व्याख्या की है–

'ज' कारो जन्म विच्छेदः 'प' कारो पाप नाशकः।
तस्माज्जपः इति प्रोक्तः, जन्म पाप विमुच्यते।।

जिससे जन्म-मृत्यु का चक्र समाप्त हो जाता है तथा सब पापों का नाश हो जाता है, उसे जप कहते हैं। अनेक प्रकार के जपों का उल्लेख मिलता है, वाचिक जप जो बोल के किया जाता है। मानसिक जाप जो मन में किया जाता है तथा उपांशु जप, जिसमें सिर्फ होठ हिलते हो परन्तु किसी तरह की आवाज नहीं होती। मंत्र सिद्धि में जप का महत्व बहुत ज्यादा होता है। मंत्र शास्त्र में लिखा है– जपात् सिद्धि जपात् सिद्धि जपात् सिद्धि न संशयः। जप करते रहो, करते रहो अवश्य सिद्धि मिलेगी। अतः सिद्धि का इच्छुक मनुष्य जप का आलम्बन रखे।

भिक्षु की कहानी
जयाचार्य की जुबानी

हिंसा में पुण्य कैसे?

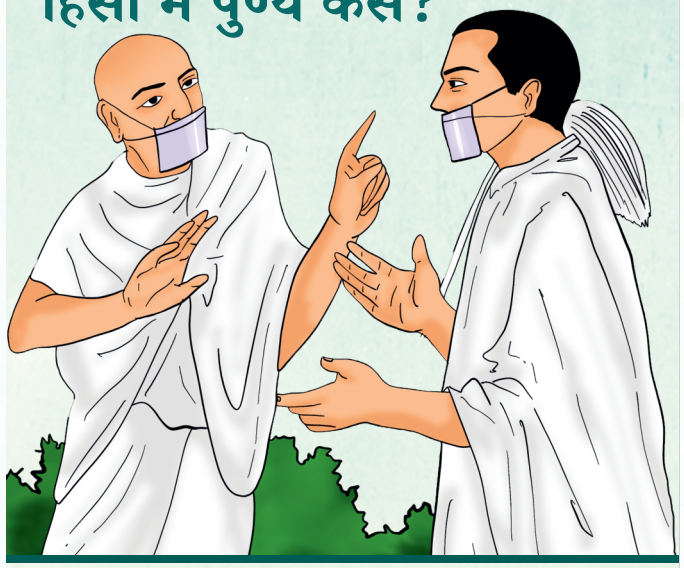

रीयां गांव में अमरसिंहजी का साधु तिलोकजी, स्वामीजी के पास आकर बोला– 'सूत्र में अन्न-पुण्य आदि नव प्रकार के पुण्य बतलाए हैं। भगवान ने प्रदेशी की 'दानशाला' कही, पर पापशाला नहीं कही। भगवान ने 'अन्नपुण्य' कहा, पर 'अन्नपाप' नहीं कहा। अरे! तुमने तो दान-दया उठा दी।'

स्वामीजी बोले– 'किसी ने अनुकम्पा कर किसी को सेर बाजरा दिया। उसमें पुण्य तो है न?'

तब वह बोला– 'हम क्या जानें? हम तो लिखा हुआ पढ़ते हैं। हमने आगरा का पानी पिया है, हमने दिल्ली का पानी पिया है।'

तब स्वामीजी बोले– 'दिल्ली और आगरा में तो गायें कटती है। इसमें कौन-सी विशेषता हुई? सूत्र पढ़े हो तो बतलाओ।'

इतने में लूंका गच्छ का रतनजी यति आया। उसने यह बात सुनी और तिलोकजी को टोकते हुए बोला– 'हम शिथिल हो गए हैं तो भी अनाज के एक दाने में चार पर्याप्ति, चार प्राण मानते हैं। उसे खिलाने में पुण्य कैसे होगा? और तुम मुख-वस्त्रिका बांध कर क्यों खराब हुए, जबकि तुम एकेन्द्रिय जीव को खिलाने में पुण्य बतलाते हो?'

इस प्रकार उसे निरुत्तर कर दिया, तब वह चला गया।

क्या आप जानते हैं?

पैकेट बंद नमक संदेहास्पद हो सकते हैं, अतः उन्हें सचित्त माना जाता है। तले हुए खांखरे आदि पर यदि सचित्त नमक लगाया जाए, भले मिर्च के साथ लगाया जाए, उसे सचित्त माना जाता है।

साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह बाजार की मिठाई का त्याग करें।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
04 अगस्त - 10अगस्त, 2025

अहिंसा की साधना के लिए अपेक्षित है अनासक्ति की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

धर्मसंघ की समृद्ध 'संपदा' उपासक श्रेणी को मिला वृद्धिंगत होने का शुभाशीष

कोबा, गांधीनगर।
25 जुलाई, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि पांच इन्द्रियों के विषयों को दृष्ट कहा जाता है। मानव शरीर में पांच इन्द्रियां होती हैं, उनके पांच विषय होते हैं और उन विषयों की पांच प्रवृत्तियां होती हैं। जैसे श्रोतेन्द्रिय अर्थात् कान का विषय है — शब्द, और इसकी प्रवृत्ति है — सुनना। इसी प्रकार, आंख से देखना, नाक से सूंघना, जिह्वा से स्वाद लेना और त्वचा से स्पर्श करना होता है। जिस प्राणी के पास श्रोतेन्द्रिय होती है, वह निश्चय ही पंचेन्द्रिय होता है। सुनने की क्षमता सभी प्राणियों में नहीं होती।

कान से आदमी सुनता है। शब्द जब कान में आते हैं, तो उनके प्रति राग-द्वेष उत्पन्न हो सकता है। आगम में बताया गया है कि इन्द्रिय विषयों में विशेषतः स्वाद के प्रति आसक्ति से बचना चाहिए; इनके प्रति न तो राग होना चाहिए, न द्वेष। अहिंसा की साधना करने के लिए अनासक्ति की साधना करना अपेक्षित है। यदि दृष्ट विषयों के प्रति राग होता है, तो व्यक्ति हिंसा की ओर भी प्रवृत्त हो सकता है। आंख का विषय है — रूप।

जब आदमी आंखों से देखता है, तो देखने से उसके मन में राग भाव जुड़ सकता है। भौतिकता की चकाचौंध आंखों को लुभा सकती है, और उनके प्रति राग की भावना जागृत हो सकती है। इसलिए अहिंसा की साधना के लिए इन्द्रिय विषयों के प्रति अनासक्त रहने की अपेक्षा है। इसी प्रकार, व्यक्ति को गंध, रस और स्पर्श के प्रति भी अनासक्ति की चेतना विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। विषयों के आकर्षण के कारण व्यक्ति दूसरों को कष्ट देने का प्रयास कर सकता है। इसलिए व्यक्ति को विषय-आकर्षण से बचकर, उनके प्रति अनासक्त रहने का प्रयास करना चाहिए। जब आकर्षण होता है, तब व्यक्ति प्रवृत्त होता है, और वह हिंसा तक भी पहुंच सकता है। भौतिकता का उपयोग आवश्यकतानुसार किया जा सकता है, लेकिन इसमें अधिक समय नहीं लगाना चाहिए। आधुनिक उपकरणों, जैसे मोबाइल आदि की उपयोगिता में भी संयम अपेक्षित है।

बाह्य आकर्षण की दुनिया में व्यक्ति को भौतिकता के मोह को त्यागकर अपने चित्त को अध्यात्म में लगाने का प्रयास करना चाहिए।

त्रिदिवसीय उपासक सेमिनार के अंतिम दिन पूज्य प्रवर की सन्निधि में आयोजित कार्यक्रम में उपासक श्रेणी के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमारजी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश सामसुखा ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आचार्यश्री ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि उपासक श्रेणी हमारे धर्मसंघ की एक संपदा बन रही है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में यह श्रेणी वर्षों से वर्धमान है।

इस श्रेणी में धर्म के प्रति प्रवृत्ति और गौरव की भावना निरंतर बढ़ती रहे। यह उपासक श्रेणी धर्मसंघ की एक समृद्ध 'संपदा' बनकर निरंतर वृद्धिंगत होती रहे। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अर्हम्

'सुदीर्घजीवी' 'शासनश्री' साध्वी श्री बिदामांजी पींपली (छापली) का देवलोकगमन

जीवन परिचय

जन्म : वि. सं. 1975 कार्तिक कृष्णा चतुर्थी, (सिद्धियोग, पुष्य नक्षत्र में)
जन्म स्थान : सरेवड़ी (मेवाड़)
माता-पिता : स्व. हंज्जा बाई स्व. विरधीचंदजी चावत
पति : स्व. पेमराज दक सुपुत्र ज्ञानमलजी दक पींपली (छापली)
दीक्षा : आचार्यश्री तुलसी के करकमलों से वि. सं. 1998 कार्तिक कृष्णा नवमी, राजलदेसर
'शासनश्री' अलंकरण : परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा, सन् 2012, सं. 2069 भाद्रव शुक्ला नवमी, विकास महोत्सव के अवसर पर जसोल चातुर्मास में
'सुदीर्घजीवी' अलंकरण : शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा वि. सं. 2074 कार्तिक कृष्णा चतुर्थी, 9 अक्टूबर, 2017 कोलकाता चातुर्मास में, जन्म शताब्दी प्रवेश पर
तपस्या : 11/1, 10/1, 9/2, 8/8, 7/2, 6/2, 5/22, 4/27, 3/56, 2/276, 1/4737
नवकारसी तपः 15 वर्षों की उम्र से प्रारंभ 106 वर्ष 9 महिने 13 दिन की उम्र तक।
जपः प्रतिवर्ष ओम भिक्षु, ओम जय तुलसी, महावीर स्वामी केवलज्ञानी का सवा लाख जप, नमस्कार महामंत्र की अनुपूर्वी, लोगस्स, उपसर्गहर स्तोत्र, विघ्न हरण मंगल करण की प्रतिदिन एक माला।
कण्ठस्थ ज्ञान : पच्चीस बोल, बावन बोल, जाणपणां रा पच्चीस बोल, हितशिक्षा रा पच्चीस बोल, गुणस्थान द्वार, इक्कीस द्वार, लघु दण्डक, संजया, नियंठा, पाना की चर्चा, कर्म प्रकृति, तेरह द्वार, बड़ी चर्चा, सेरयां, गतागत, पण्णवणा री जोड़, नियंठा री ढाल, दृढ़ समकित री ढाल, गुण ठाणा री ढाल, ओलखणा री ढाल, अठारह पाप री ढाल,आठ प्रवचन माता की ढालें, साधु वंदना छोटी, दसवैआलियं सूत्र के चार अध्ययन, सौ बोल काणा खोडा, छः आरा,भूण द्वार - हेमराजजी स्वामी के 25 बोल के अन्तर्गत, आराधना, पच्चीस बोल की चर्चा, तेरापंथ प्रबोध, तुलसी प्रबोध, कालू तत्त्व शतक, अनन्त चौबीसी, चौबीसी, आचार बोध, संस्कार बोध, व्यवहार बोध, तत्त्व चर्चा, अनेक पुरानी गीतिकाएं।
कण्ठस्थ व्याख्यान : जैन रामायण, मुनिपत का व्याख्यान, चन्द्रशेखर जय शेखर, आषाढ़ भूति, टोकरियो, डेढ बेटो, बासी टुकड़ा, सम्यक्त्व रतन अनमोल, कुम्हारी री करामात, समता रो समन्दर, भावदेव-भवदेव।
स्वाध्याय : 13 आगम ग्रंथों का श्रवण व स्वाध्याय।
कला : रजोहरण, प्रमार्जनी, मुखवस्त्रिका, पात्र, पात्री, सिलाई, रंगाई
चाकरी : 3 चाकरी लाडनूं की, 2 चाकरी श्रीडूंगरगढ़, 3 चल चाकरी।
यात्रा : मेवाड़, मारवाड़, मध्यप्रदेश, थली, हरियाणा, पंजाब, वर्तमान में कालू में लगभग 10 वर्षों से साध्वी उज्ज्वलरेखा जी के साथ स्थिरवास।
विशेष :

1. आयुः 106 वर्ष 9 माह 13 दिन
2. संयम पर्यायः 83 वर्ष 9 माह 7 दिन
3. विक्रम संवत 1999 खैरवा (मारवाड) साध्वी बखतावरजी के द्वारा ऐलोपैथिक, होम्योपैथिक, आयुर्वेदिक दवा का यावज्जीवन प्रत्याख्यान किया।
4. आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी, आचार्य श्री महाश्रमण जी ने समय-समय पर आपके विषय में फरमाया।
5. साध्वी बखतावरजी, दीर्घतपस्विनी साध्वी भूरांजी, साध्वी आनंदकुमारी जी(मोमासर), साध्वी सुजाणां जी (मोमासर) की तन के कपड़े की तरह सेवा की।
6. 84 वर्षों तक पैदल यात्रा।
7. आप पिछले 42 सालों से साध्वी उज्ज्वलरेखा जी के ग्रुप में रह रही थी।

अनशन : 25 जुलाई 2025 को रात्रि 9 बजकर 17 मिनिट पर तिविहार संथारा, 10 बजकर 58 मिनिट पर चौविहार संथारा।

देवलोकगमन : विक्रम संवत 2082, श्रावण शुक्ला एकम्, 25 जुलाई 2025, रात्रि लगभग 11 बजकर 5 मिनिट पर कालू (बीकानेर) में।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।